• वर्ष ६५ • अंक १४ • मूल्य ₹२०

जुलाई ( द्वितीय ) २०२३

पाक्षिक

# परोपकारी

## महर्षि दयानन्द सरस्वती

## परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द गुरुकुल आश्रम जमानी, इटारसी ( म.प्र. ) में गुरुकुल के नवीन ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार

यज्ञ के ब्रह्मा मुनि सत्यजित् ( मन्त्री- परोपकारिणी सभा, अजमेर )

आचार्य सत्यप्रिय आर्य एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारी यज्ञाग्नि से दीक्षित होते हुए

दीक्षित ब्रह्मचारियों एवं आचार्यों का सामूहिक चित्र

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र

ओ३म्

*विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,*
*सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।*
*संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,*
*धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।*

**वर्ष : ६५ अंक : १४**

दयानन्दाब्द: १९९

विक्रम संवत् - श्रावण कृष्ण २०८०

कलि संवत् - ५१२४

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२४

▪

**सम्पादक**

**डॉ. वेदपाल**

▪

**प्रकाशक**- परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४
०८८९०३१६९६१

▪

**मुद्रक**-देवमुनि-भूदेव उपाध्याय
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
७७४२२२९३२७

▪

**परोपकारी का शुल्क**

**भारत में**

**एक वर्ष**-४०० रु.

**पाँच वर्ष**-१५०० रु.

**आजीवन ( २० वर्ष )** -६००० रु.

**एक प्रति** - २०/- रु.

**वैदिक पुस्तकालय :** ०१४५-२४६०१२०
०७८७८३०३३८२

**ऋषि उद्यान :** ०१४५-२९४८६९८

**RNI. No. ३९५९ / ५९**

# परोपकारी

## जुलाई द्वितीय, २०२३

## अनुक्रम


| | | |
|---|---|---|
| ०१. गुरुपूर्णिमा/गुरुपर्व | सम्पादकीय | ०४ |
| * दम्पती शिविर | | ०५ |
| ०२. कहाँ से कहाँ पहुँच गये? | प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' | ०६ |
| ०३. श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी.... | श्री भावेश मेरजा | ०९ |
| * ऋषि मेला-२०२३ हेतु दुकान (स्टॉल) आवंटन | | १२ |
| ०४. अग्नि सूक्त-४८ | डॉ. धर्मवीर | १३ |
| ०५. साम-गान का आदि स्रोत और उद्देश्य | श्री जगत् कुमार शास्त्री | १५ |
| * परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम | | १८ |
| ०६. राष्ट्रीय एकता की समस्या | डॉ. भवानीलाल भारतीय | १९ |
| ०७. परम-पद | साधु सोमतीर्थ | २२ |
| ०८. संस्था समाचार | श्री ज्ञानचन्द | २५ |
| * १४० वाँ ऋषि बलिदान समारोह | | २७ |
| * वेदगोष्ठी-२०२३ | | २९ |
| * परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट | | ३१ |
| ०९. संस्था की ओर से.... | | ३२ |
| * 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति | | ३३ |
| १०. पुस्तक-परिचय | देवमुनि | ३४ |


www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

**उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ**
**www.paropkarinisabha.com→gallery→videos**

*'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।*
*किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।*

सम्पादकीय

# गुरुपूर्णिमा/गुरुपर्व

मनुष्य स्वभाव से उत्सवप्रिय है। जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षण अथवा विशिष्ट अवसरों को वह उत्सव का स्वरूप प्रदान कर देता है। इन अवसरों के स्थायित्व की दृष्टि से इन्हें किसी विशेष तिथि/मास के साथ सम्बद्ध कर दिया गया है। इसका विशेष लाभ यह है कि उस निश्चित तिथि को उस पर्व का आयोजन बिना किसी भूलचूक के होता रहता है। इन्हीं पर्वों की श्रृंखला में एक है गुरुपूर्णिमा या गुरुपर्व। वैसे तो प्रत्येक मास में एक बार पूर्णिमा तिथि आती है, किन्तु आषाढ़ मास की पूर्णिमा को सम्पूर्ण देश में इसका आयोजन होता है। इस दिन शिष्य अपने गुरु के समीप जाकर उनका अभिनन्दन-वन्दन कर उनसे अशीर्वाद प्राप्त करते हैं। अभी तीन जुलाई को सम्पूर्ण देश में गुरुवन्दन के दृश्य स्थान-स्थान पर श्रद्धा भरितभावपूर्ण देखे गए।

मनुष्य के ज्ञान-विवेक की सीमाएँ हैं। वैसे भी यदि कोई मनुष्य उसे ज्ञान न दे, तो उसके शिष्ट मनुष्य बनने का भी प्रश्न नहीं उठता है। जहाँ पशु-पक्षियों के पास स्वाभाविक ज्ञान है, जिसके सहारे उनका जीवन चलता रहता है,वहीं मनुष्य के पास स्वाभाविक ज्ञान अत्यल्प है। उसका विकास उसके द्वारा अधिगत नैमित्तिक ज्ञान के माध्यम से होता है। इसी नैमित्तिक ज्ञान के प्रदाता को गुरु कहा गया है। मनुष्य का जीवन वैविध्यपूर्ण है, इन्हीं सब विषयों का ज्ञान उसे एकाधिक व्यक्तियों से प्राप्त होता है। यह सब उसके गुरु हैं। पुनरपि मनुष्य इन सब में से किसी एक के प्रति अधिक कृतज्ञ रहना है और उसी को 'गुरु' पद से सम्बोधित भी करता है।

भारतीय परम्परा में गुरु को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है और यहाँ तक कह दिया है कि परमगुरु-ईश्वर का बोध कराने वाला भी गुरु ही है। भावातिरेक में कवि की उक्ति है-

**गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पाय।**
**बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।**

किन्तु उक्त भाव की आड़ में तथाकथित गुरुओं ने गोविन्द-परमेश्वर को तो पीछे ही नहीं किया, अपितु परिदृश्य से इस प्रकार ओझल किया कि शिष्य का सम्पूर्ण समर्पण गुरु के प्रति होकर रह गया। इससे सबसे बड़ी हानि यह हुई कि-किसी समय गुरु शिष्य को अपने सुचरित को ही ग्रहण करने तथा विपरीत आचरण के ग्रहण करने का निषेध करता था, वह छूट गया। गुरु के आचरण में उचित-अनुचित, नैतिक-अनैतिक के भेद करने का अधिकार शिष्य का नहीं रहा।

गुरु ने स्वयं को 'अमृत की खान' बताना प्रारम्भ कर दिया। शिष्य ने समर्पण (तन-मन-धन) करने को सौभाग्य मान लिया, क्योंकि उसे तो गुरु ने प्रथम ही उपदेश कर दिया था कि-

**'यह तन विष की बेलरी', गुरु अमृत की खान।**
**शीश दिये जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान।।**

इससे शिष्य का तो भला नहीं हुआ, किन्तु गुरु का (वह भी तो अल्पज्ञ और अल्प सामर्थ्य वाला है। इसलिए) पतन अवश्य हुआ। विगत एक दशक की अनेक घटनाएँ हैं, जो इस बात की साक्षी हैं। आज उक्त प्रकार के अनेक गुरु सुधार गृह (जिसे वह जेल न कहकर कृष्ण मन्दिर कहते हैं, मानो वह वहाँ भी भक्ति-उपासना ही कर रहे हैं तथा जेल जाना किसी अपराध का दण्ड न होकर सौभाग्य का अवसर है कि उन्हें कृष्ण मन्दिर जाना हुआ। मन्दिर की यात्रा और वास का सुयोग सुलभ हुआ। इस भाव के रहते क्या व्यक्ति कभी प्रायश्चित्त कर सकता है?) में हैं, तो कुछ गिरफ्तारी से बचने के लिए भूमिगत हैं।

गुरु पूर्णिमा पर गुरु के स्मरण की प्रासंगिकता का

निषेध न तो सम्भव है और न ही उचित। गुरुपद पर अधिष्ठित होने के लिए भारतीय परम्परा ने उच्च नैतिक मानदण्ड स्वीकार किए हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है- शिष्य के अन्दर विवेक जागृत करने का सामर्थ्य, जिससे शिष्य नैतिक-अनैतिक, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य के विवेक से सम्पन्न हो सके और साथ ही गुरु के सदाचरण से शिष्य आचरण की शिक्षा ग्रहण कर सके।

परमेश्वर गुरुओं का भी गुरु है। यदि किसी के अन्तर्मन में यह पर्व इस भाव को जागृत कर दे कि उस गुरु का भी वन्दन कर्त्तव्य है, जो सर्गारम्भ में ज्ञान का प्रकाश करता है। ऐसे जागृत के लिए पर्व की सार्थकता है।

**- डॉ. वेदपाल**

# दम्पती शिविर

**दिनांक २४ अगस्त ( गुरुवार ) से २७ अगस्त ( रविवार ) २०२३ तक**

**स्थान - पुष्कर मार्ग, ऋषि उद्यान, अजमेर**

दम्पती अर्थात् पति-पत्नी गृहस्थ के आधार होते हैं। पति-पत्नी का परस्पर प्रिय सम्बन्ध पूरे गृहस्थ आश्रम व समीपस्थ परिजनों-मित्रों को सुप्रभावित करता है। पति-पत्नी की परस्पर प्रियता-अप्रियता की न्यूनाधिकता उनके परस्पर व्यवहार की कुशलता-अकुशलता पर निर्भर करती है। दोनों का सुख-दु:ख इसी पर आश्रित है।

परस्पर प्रियता-सुख-शान्ति का जो स्तर पति-पत्नी चाहते हैं, वह प्रयत्न-पुरुषार्थ के अनुसार न्यूनाधिक रहता है। न्यूनता को हटाने के लिए उपायों की जिज्ञासा बनी रहती है। यदि आप में ऐसी जिज्ञासा है तो यह शिविर आपके लिए उपयोगी है।

आप इस शिविर में जहाँ दाम्पत्य जीवन की वैदिक दृष्टि से अवगत होंगे, वहाँ आपके दाम्पत्य जीवन की समस्याओं का आध्यात्मिक-व्यावहारिक समाधान भी मिल सकेगा। पति-पत्नी के परस्पर सम्बन्धों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण आपसी सम्बन्ध को बढ़ाने में सहायक होगा। आइये एक प्रयास इस दिशा में भी करके गृहस्थ को स्वर्गाश्रम की ओर ले चलें।

**शिविर के प्रशिक्षक हैं**- मुनि सत्यजित् एवं मुनि ऋतमा।

इस आवासीय शिविर हेतु **२३ अगस्त को सायं ४ बजे तक पहुँच जाना है।** शिविर की समाप्ति २७ अगस्त को अपराह्न ४ बजे तक होगी। आप अनुकूलता से एक दिन आगे-पीछे २३ अगस्त को आ सकते हैं व २८ को प्रस्थान कर सकते हैं। संख्या सीमित रहेगी। अपना आवेदन देकर स्वीकृति मिलने पर शिविर शुल्क जमा करा देवें। आवेदन का अन्तिम दिन १५ अगस्त है। **शिविर शुल्क १०००/-प्रति व्यक्ति है। निवास शुल्क :** सामूहिक-नि:शुल्क, पृथक् कक्ष- १०००/- (पंखा), २०००/- (कूलर), ३०००/- (ए.सी.) अतिरिक्त रहेगा। असमर्थ किन्तु योग्य दम्पती को शिविर शुल्क में छूट दी जा सकती है। शिविर में पति-पत्नी दोनों का आना आवश्यक है, बच्चों को साथ नहीं लाया जा सकता है। मोबाईल आदि सम्पर्क-उपकरणों का प्रयोग निषिद्ध रहेगा, इन्हें कार्यालय में जमा करा देना है।

**सम्पर्क** - वाट्सएप्प- ९३१४३९४४२१ (नन्दकिशोर जी) ई-मेल- psabhaa@gmail.com

## आभूषण

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चाँदी, माणिक, मोती, मूंगा आदि रत्नादि से युक्त आभूषणों के धारण कराने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं होता क्योंकि आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है।

**सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास**

# कहाँ से कहाँ पहुँच गये?

**प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'**

**आर्यो! पग पीछे तो न हटे**- यह मेरठ जनपद के एक ग्राम की ऐतिहासिक घटना है कि एक बार वहाँ पर आर्यसमाज के सर्वमान्य संन्यासी नेता लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज पधारे। उस ग्राम में एक कृषक वेदभक्त ऋषिभक्त रहते थे। वह अपनी ऋषि भक्ति के कारण 'भक्तजी' नाम से ही जाने जाते थे। मैं भी अपने जेल के उस बन्धु का वास्तविक नाम अब भूल गया हूँ। भक्तजी एक दिन पूज्य स्वामी जी को भोजन करवाने के लिये जा रहे थे। चलते-चलते महाराज से धर्म चर्चा होती गई। उस चर्चा में स्वामी जी ने भक्तजी से यह कहा, **''आर्यो! यदि आगे न बढ़ सको तो पग पीछे नहीं हटना चाहिये।''**

यह वाक्य भक्तजी के कारण पूरे मेरठ जनपद के आर्यों में चर्चित होता होता देशभर में प्रचारित हो गया। अब आर्यसमाज अपनी इस विशिष्टता को खो चुका है। मेरे बाल्यकाल में बड़ों से सुन-सुनकर मेरे हृदय पर आचार्य रामदेव जी और मेहता जैमिनि जी की विद्वत्ता तथा व्याख्यान शैली की यह विशेषता अंकित हो गई कि वे आर्यसमाज के गौरव विषयक एक-एक प्रमाण व कथन को वे अपने लेखों व व्याख्यानों में सप्रमाण ऐसे सुनाते हैं कि श्रोताओं के हृदय पर अंकित कर देते हैं।

सन् १९४६ में मैंने जब पहली बार मेहता जैमिनि जी को सुना **तो मेरे मुख से निकला, ''आज जीवन में पहला व्याख्यान सुना है।''** वह पूरा व्याख्यान मुझे तत्काल याद हो गया और आज तक भी उसे सुनाता हूँ। पं. लेखराम आदि हमारे बड़े-बड़े विद्वानों की यह बहुत बड़ी विशेषता थी। अब आर्यसमाजी वक्ता लेखक अपने विद्वानों की ऐसी खोज, कथन की देन को उठाते ही नहीं। न ही सप्रमाण लिखते व बोलते हैं।

**हमारा पग पीछे हट गया है। आगे नहीं बढ़ा।**

**एक चिन्ताजनक गिरावट**- महर्षि दयानन्द जी जब पूना गये, तो वहाँ के कुछ प्रतिष्ठित दलित बन्धुओं ने आपको अपनी पाठशाला में वेदोपदेश देने की लिखित विनती की। महर्षि ने झट से उन्हें स्वीकृति दे दी और वहाँ जाकर वेदोपदेश सुनाया। यह घटना बहुत से विद्वान् जानते हैं। हमारे यशस्वी विचारक विद्वान् वेदपाल जी ने इस प्रसंग को लेकर तीन-चार ग्रन्थों में ऐसा उठाया है कि मैं पढ़कर झूम उठा। आर्यसमाज के पहले विचारक डॉ. वेदपाल हैं, जिन्होंने विश्व इतिहास में इस घटना, ऋषि की देन के महत्त्व को मुखरित करके आर्यसमाज का सिर ऊँचा कर दिया है। आप लिखते हैं, **''ऐतिहासिक दृष्टि से हजारों वर्ष के इतिहास की यह पहली घटना है कि कोई वेदज्ञ शूद्र अति शूद्रों को वेदोपदेश प्रदान करता है।''**

मेरे लेखों व ग्रन्थों में इसे पढ़कर एक भी वक्ता व लेखक ने आर्यसमाज के डेढ़ सौ वर्ष के इतिहास में एक वैदिक विद्वान् की प्रसार करने योग्य इस अनुपम देन को नहीं उठाया। मैं इस पर और टिप्पणी क्या दूँ? **अश्रुपात ही कर सकता हूँ।**

**इतिहास का कचूमर निकाल दिया**- एक प्रबुद्ध स्वाध्याय प्रेमी पाठक ने उत्तर प्रदेश में कहीं से एक शंका करके एक घटना को स्पष्ट करने की प्रेरणा दी है। उनका यह कथन ठीक है कि आप सजग कर देंगे तो भूल भ्रम के चक्कर में फँसने से आर्यजनता बच जावेगी। उस बन्धु का कथन है कि एक लेखक ने श्री महाशय राजपाल पर अपने लम्बे लेख में यह लिखा है कि जब खुदाबख़्श नाम के पहले पहलवान हत्यारे ने महाशय जी पर छुरे से वार किया उस समय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी तथा स्वामी वेदानन्द जी वहाँ उपस्थित थे। **''उन्होंने घातक को ऐसा कसकर दबोचा कि वह छूट न सका।''**

उस शंका करने वाले भाई का कहना है कि इस वाक्य से तो इतिहास प्रदूषित होता है। हम यह सुनते पढ़ते आये हैं कि हत्यारे खुदाबख़्श को अकेले स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने पकड़ा था। इस लेखक ने **उन्होंने घातक को ऐसा कसकर दबोचा...।**

भ्रान्ति का निवारण होना चाहिये। प्रतीत तो ऐसा होता है कि इस लेखक ने महाशय जी पर मेरी पुस्तक पढ़ी है। ''कसकर'' शब्द मैंने उस काल के आर्यपुरुषों से सुनकर ही लिखा है। केवल और केवल स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने ही हत्या के लिये आये उस हत्यारे को पकड़ा था। स्वामी जी ने महाशय जी की जीवनी लिखी हे। उसमें यह लिखा ही नहीं कि मैंने ख़ुदाबख़्श को पकड़ा था। **यही तो उनका बड़प्पन था।**

स्वामी वेदानन्द जी ने ''पुलिस, पुलिस'' का शोर मचाया तो पुलिस आ गई फिर स्वामी जी से पुलिस ने उसे छुड़वाकर कैसे अपनी पकड़ में लिया। यह भी तो एक इतिहास है। कभी फिर इस पर लिखूँगा।

मैंने अपनी पुस्तक में तीनों हत्यारों पर पाकिस्तान से छपी इस्लामी पुस्तक के पठनीय उद्धरण दिये हैं। **आर्यसमाजी लेखक उनका लाभ नहीं ले पाये।** उस इस्लामी पुस्तक में छपा मिलता है कि ख़ुदाबख़्श का एक और भी पंजाबी नाम था, ''इक्को जिहा'' अर्थात् अद्वितीय। इसका सीधा अर्थ यही है कि इस जैसा कोई और बलवान है ही नहीं। जब आर्यजाति के पचास वर्षीय अखण्ड ब्रह्मचारी महात्मा ने उसे धर दबोचा तो उस अद्वितीय गाज़ी की मुट्ठी भी न खुल सकी। यह मैंने अपनी पुस्तक में लिखा है।

अच्छा होता गुणी लेखक यह भी तो साथ लिख देता। इस लेखक ने न जाने यह क्यों नहीं लिखा कि पाकिस्तान में छपी पुस्तक में हमारे बेजोड़ संन्यासी का तो नाम तक नहीं दिया। आर्यजाति इस पर जितना भी अभिमान करे थोड़ा है। पाकिस्तानी साहित्यकार ने हमारे सद्गुरु स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का इसी कारण से नाम तक नहीं लिखा कि **इससे तो इस्लाम और गाजियों की शान पर धब्बा लगता है।**

पाकिस्तानी लेखक ने पूज्य स्वामी जी का नाम ही नहीं लिखा तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं, परन्तु जिस गुणी लेखक ने किसी पत्र में महाशय जी पर लेख लिखने का प्रशंसा योग्य उत्साह दिखाया है उसने अपनी जानकारी के स्रोत का अता-पता क्यों नहीं दिया। यह तो उससे भी बढ़कर आश्चर्य का विषय है। पहले आर्य गवेषक लेखक अपने युक्ति, तर्क, प्रमाण आदि का पूरा पता देने में अपनी व आर्यसमाज की शान मानते थे।

अब जानकारी के स्रोत को छिपाना प्रतिष्ठा का कारण है। स्रोत का पता देने में हीनता अनुभव की जाती है। मैंने श्री महाशय राजपाल जी की जीवनी लिखते हुये तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं, उस युग के विद्वानों के पास पुस्तक लिखते समय भेंट करके उनके साक्षात्कार लेकर फिर ग्रन्थ लिखा। वे स्रोत तो महाशय राजपाल जी के सुयोग्य वंशजों ने कभी देखे सुने ही नहीं थे। कोई आर्यजगत् में है जो हिन्दू साप्ताहिक पत्र के महाशय राजपाल बलिदान अंक को देखने (पढ़ना तो छोड़िये) का सौभाग्य रखता हो?

आर्यसमाज के इन लेखकों की सर्वज्ञता पर बलिहारी।

**ऋषि भक्तों को सादर भेंट- जीवन संग्राम-** पूरी आशा है कि परोपकारी के इस अंक के छपने तक एक नई खोजपूर्ण पुस्तक **''जीवन संग्राम-पं. गंगाराम''** धर्मप्रेमी जनता तक पहुँच जावेगी। इस पुस्तक में आर्यसमाज के एक आग्नेय पुरुष क्रान्तिवीर पं. गंगाराम की जीवनी के प्रत्येक पहलु पर अत्यन्त खोजपूर्ण प्रकाश डाला गया है। पं. गंगाराम जी एक उच्च शिक्षित वानप्रस्थी और कर्मवीर आर्य मिशनरी थे। इस दीर्घजीवी समाज सेवी ने ऋषि मिशन के लिये, देश व समाज की रक्षा व सेवा के लिये सब करणीय कार्य किये।

**गंगाराम जी क्या थे?-** श्री पं. गंगाराम जी आर्यसमाज के एक निर्माता थे। हैदराबाद स्टेट के

आर्यनेताओं में से आपको देश धर्म की रक्षा व सेवा के लिये सब से अधिक समय (अस्सी वर्ष) प्राप्त हुआ। आप में कई लोग पूछेंगे कि हैदराबाद के इस कर्मठ आर्यनेता ने क्या-क्या किया? और समाज को क्या-क्या दिया?

**क्या नहीं किया? क्या नहीं दिया?**- इस प्राणवीर ने पवित्र ओ३म् ध्वज के नीचे देश धर्म के लिये **क्या-क्या नहीं किया? और लोकहित में क्या-क्या नहीं दिया?**

**लहू तक दिया**- इस दिलजले बलिदानी नेता ने शीश तली पर धर कर प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक मोर्चे पर आर्यधर्म के लिये साहसिक कार्य किये। श्री पं. विनायक राव जी, श्री पं. नरेन्द्र जी के साथ आप एक आर्यसमाज की स्थापना करके गाड़ी में लौट रहे थे। तब चलती गाड़ी में निज़ाम सरकार के रज़ाकार गुण्डों ने आप पर तथा पं. नरेन्द्र जी पर गोलियाँ बरसा दीं। पं. नरेन्द्र जी की टोपी को छूते हुये गोली निकल गई। वह बच गये। गंगाराम जी पर गोली वर्षा की तो एक गोली पीठ को लगकर जाँघ से निकल गई।

ड्राईवर आप सब को सुरक्षित बचाकर गाड़ी को वहाँ से निकालकर ले आया। लहूलुहान गंगाराम जी उस दिन गम्भीर रूप से घायल तो हो गये, परन्तु मातृवेदी पर शरीर न चढ़ा पाये। उस दिन बलिवेदी पर प्राण न चढ़ा सके। इसमें कमी क्या रह गई?

लोग सरकारी सर्विस पाने के लिये उतावले रहते हैं। तीन वर्ष की आयु में अनाथ होने वाले गंगाराम वायुसेना के लिये चुने गये युवकों में प्रथम स्थान पर रहा। विनायक राव जी ने तथा कृष्णदत्त जी ने तब आपसे एक वाक्य कहा, "**आप सरकार की सर्विस करेंगे तो आर्यसमाज का क्या बनेगा?**" बस यह वाक्य सुनते ही गंगाराम जी ने माता आर्यसमाज की सेवा के लिये पदप्रतिष्ठा सरकारी सर्विस पर लात मार दी।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का तप, त्याग, शूरता आपके जीवन आदर्श थे। जीवन का आदर्श स्वामी श्रद्धानन्द तथा पं. लेखराम थे। भोगविलास पर बिन सोचे झट से गंगाराम जी ने लात मारकर आर्यसमाज को गौरवान्वित कर दिया।

**दुखिया विधवा को बचाने के लिये**- कुमार गंगाराम आर्यसमाजी बने ही थे कि नदी तट पर दो अभागी विधवा युवतियां को आत्महत्या करने के लिये नदी में छलाँग लगाते देखा। दयालु दयानन्द का यह शिष्य बिन सोचे उन्हें बचाने के लिये गोदावरी नदी में कूद पड़ा। एक युवती को बचा लिया। दोनों को एक साथ तो बचाया न जा सकता था। मतान्ध निज़ामी राज्य में आपको नारी रक्षा के लिये शूरता का मेडल देकर सम्मानित किया गया। सनातन हिन्दू धर्म की दुहाई देने वाले **किसी नेता ने आज तक किसी विधवा की रक्षा के लिये जान पर खेलने का ऐसा चमत्कार दिखाया क्या?**

दलितोद्धार के इतिहास के लिये, जातिबन्धन तोड़ने के लिये, निर्धनों में शिक्षा प्रसार के लिये, शुद्धि के लिये, स्वराज्य संग्राम में कारागार की यातनायें सहने के लिये, वेदप्रचार के इतिहास में, सामाजिक बहिष्कार के इतिहास के लिये, साहित्य सृजन व प्रकाशन के लिये, आर्यसमाज के इतिहास पर लिखने व बोलने के लिये इस 'जीवन संग्राम' पुस्तक का लाभ लिये बिना कोई भी देश, मुक्ति संग्राम, स्वराज्य संग्राम तथा आर्यसमाज के इतिहास से न्याय नहीं कर सकेगा।

**अपने लहू से सींच दी प्यारे ऋषि की वाटिका,**
**जीवन सफल बना लिया गुणवान गंगाराम ने।**

**वेद सदन, न्यू सूरज नगरी, अबोहर, पंजाब।**

---

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२**

# श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी का 'व्याख्यान' - एक अदने आर्यसमाजी की दृष्टि में

- भावेश मेरजा

दिनांक २५ सितम्बर २०२२ को वैदिकधर्म एवं आर्यसमाज से सम्बन्धित महानुभावों के द्वारा गुजरात में आयोजित एक नए संस्थान के भूमि पूजन के कार्यक्रम में गुजरात के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सच्चिदानन्दजी परमहंस को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। सच्चिदानन्दजी वृद्धावस्था होते हुए भी इस कार्यक्रम में पधारे और न केवल अपना आशीर्वचन दिया, बल्कि अपने प्रासंगिक व्याख्यान में उन्होंने आर्यसमाज के शुभचिंतक के रूप में आर्यसमाज को कैसे लोकप्रिय बनाया जा सकता है? इस को लेकर आर्यसमाज के मनीषियों को कुछ सलाह भी दी।

सच्चिदानन्दजी को इस प्रसंग पर अपना जो व्याख्यान देना था इसे वे **'व्याख्यान ( आर्यसमाज के मनीषियों से प्रार्थना )'** शीर्षक से एक १६ पृष्ठीय विशेष पुस्तिका के रूप में हिंदी में प्रथम से ही छपवाकर व्याख्यान स्थल पर लाए थे, जिसे इस कार्यक्रम में उपस्थित आर्य श्रोतागण में उनके व्याख्यान का आरम्भ होने से पूर्व ही वितरित किया गया था। वे अपने मौखिक व्याख्यान में इस पुस्तिका में वर्णित सभी बातें तो नहीं कह सके, परन्तु जितना भी समय मिला उसमें उन्होंने मुख्य-मुख्य बातें कहने का प्रयास अवश्य किया।

सच्चिदानन्दजी ने यहाँ जो परामर्श दिए हैं वे 'आर्यसमाज के मनीषियों' के विचार के लिए हैं, परन्तु मैंने उनके इस व्याख्यान की वीडियो देख-सुनकर तथा 'व्याख्यान' पुस्तिका को ध्यान से पढ़कर उनकी इन बातों पर एक अदने आर्यसमाजी के रूप में यथामति विचार किया है, जिसे यहाँ प्रस्तुत करने का प्रयास करता हूँ।

अपने व्याख्यान के आरम्भ में सच्चिदानन्दजी ने कहा कि-''...यहाँ आने में मुझे थोड़ा-सा भय भी लगता है । इसलिए नहीं कि यहाँ बड़े-बड़े तार्किक विद्वान् उपस्थित हैं और उनसे कोई नोंक-झोंक हो जायेगी, किन्तु इसलिए कि जैसे आर्यसमाज के विद्वान् प्रायः सभी सम्प्रदायों से और परस्पर में भी तार्किक बुद्धि से धर्मचर्चा करते हैं, वैसे वे खुद अपने विषय में यदि कोई शुद्ध चर्चा करना चाहे या अच्छी सलाह देना चाहे तो प्रायः वे धैर्य से स्वीकार नहीं कर सकते।''

स्वामीजी को यहाँ एक प्रसंग विशेष में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। यहाँ कोई शास्त्र-चर्चा या शास्त्रार्थ की तो बात ही नहीं थी। इसलिए आर्यविद्वानों से नोंक-झोंक करने का तो यहाँ प्रश्न ही कहाँ उठता था? हाँ, यदि वेद ईश्वर-प्रणीत नहीं हैं, वेद का महत्त्व तो केवल उसके पुरातन होने से ही है- ज्ञान की दृष्टि से नहीं; आत्मा अथवा जीव अनादि, नित्य, अविनाशी सत्ता नहीं है, बल्कि जड़ से उत्पन्न होता है और मृत्यु के पश्चात् नहीं रहता; मोक्ष या मुक्ति, समाधि आदि वास्तविक नहीं हैं, केवल कल्पित हैं; मनु प्रोक्त वर्ण-व्यवस्था, यज्ञ-हवन आदि कर्मकाण्ड अप्रासंगिक एवं अवैज्ञानिक हैं; वेद में मूर्तिपूजा समर्थक मन्त्र विद्यमान हैं, इत्यादि में से यदि किसी विषय पर कोई प्रथम से ही विचार-विमर्श या वाद करना चाहते तो मुझे लगता है कि आर्यविद्वान् इसके लिए अवश्य ही उद्यत होते। परन्तु यहाँ तो कार्यक्रम का हेतु सर्वथा भिन्न था और आपके पधारने का प्रयोजन भी ऐसा नहीं था। फिर भी यहाँ आने में आपको इस बात का भय था कि आपको ऐसा लगता था कि- ''आर्यसमाज के विद्वान् खुद अपने विषय में यदि कोई शुद्ध चर्चा करना चाहे या अच्छी सलाह देना चाहे तो प्रायः वे धैर्य से स्वीकार नहीं कर सकते।'' आपका ऐसा सोच आपके अनुभव पर आधारित भी हो सकता है। वैसे ऐसा होना तो नहीं चाहिए। यदि अपने बारे में भी कोई हित दृष्टि से कुछ अच्छी सलाह देते हैं

तो न केवल उसे धैर्य से सुनना चाहिए, बल्कि उनका धन्यवाद भी करना चाहिए।

सच्चिदानन्दजी ने आगे यह बताया कि उनको शास्त्र चर्चा और शास्त्रार्थ में जरा भी रुचि नहीं रही है। इसके सम्बन्ध में वे लिखते हैं कि- ''भारत में प्राचीनकाल से धर्मचर्चा या शास्त्र चर्चा होती आयी है, किन्तु प्राय: ऐसा देखने में आया है कि इसका कोई अच्छा परिणाम देखने को नहीं मिलता । अधिकांश सभी पक्ष अपना-अपना मत-विचार या सिद्धान्त जोर-शोर से रखते हैं और दूसरे की बात भी नहीं सुनते। अंत में दोनों पक्ष 'हमजीते! हमजीते!' ऐसा शोर मचाकर अलग हो जाते हैं। मैंने काशी के ग्यारह साल के निवास काल में प्राय: अनेक बार पण्डितों का यह माहोल देखा है और उससे बड़ी निराशा हुई है। केवल और केवल सत्य के लिए शास्त्रार्थ कम ही हुए हैं और शायद ही कभी खुशी से किसी पक्ष ने अपनी पराजय या भूल स्वीकार की हो। इसलिए शास्त्र चर्चा और शास्त्रार्थ मेरे लिए कोई नयी चीज नहीं है। मैं इससे दूर हो गया हूँ। मेरी इसमें जरा भी रुचि नहीं रही है।''

सच्चिदानन्दजी ने तो अपनी स्थिति बता दी। परन्तु वास्तविकता यह है कि जब कभी किसी एक ही विषय पर दो परस्पर विरुद्ध मंतव्य या मत उपस्थित होते हैं, तब सत्य-असत्य का निर्णय करने के लिए शास्त्रार्थ से अच्छा कोई माध्यम नहीं है और इसीलिए शास्त्रार्थ की यह परम्परा अति पुरातनकाल से व्यवहार में रही है। महर्षि गौतम मुनि कृत न्याय-दर्शन सत्य-असत्य का विवेक एवं स्थापन-खण्डन विधिपूर्वक कैसे किए जा सकते हैं, इसी का वर्णन करता है। उपनिषद् आदि में हमें शास्त्र चर्चा के ऐसे प्रसंग पढ़ने को मिलते ही हैं। शंकराचार्य आदि ने भी स्वमत प्रवर्तन के लिए शास्त्रार्थ का माध्यम भी चुना था।

वर्तमान युग में महर्षि दयानन्दजी ने शास्त्रार्थ प्रणाली को पुनर्जीवित किया और अपने जीवन में अनेक शास्त्रार्थ किए। न केवल पौराणिक पंडितों से, बल्कि जैन, ईसाई एवं इस्लाम के विद्वानों से भी उन्होंने शास्त्रार्थ किए, जो 'दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह' ग्रंथ में संगृहीत हैं । चाँदापुर (जिला शाहजहांपुर) में उन्होंने ईसाई एवं इस्लाम के विद्वानों से एक साथ जो विचार-विमर्श किया था, वह तो अपूर्व ही है, जिसके आरम्भ में उन्होंने शास्त्रार्थ के पावन उद्देश्य को बहुत ही उत्तम ढंग से प्रस्तुत किया था। सच्चिदानन्द जी की यह बात सही है कि प्राय: दोनों पक्ष अपने-अपने विजय की घोषणा करते हैं, परन्तु साथ में यह भी सत्य है कि कई बार सत्यग्राही लोग अपने पक्ष की दुर्बलता और सामने वाले पक्ष की सत्यता का हार्दिक स्वीकार भी करते हैं। उदाहरण के रूप में- कर्णवास में एक वृद्ध संस्कृतज्ञ पंडित अंबादत्त ने शास्त्रार्थ में पराजित होकर महर्षि दयानन्दजी के मत को सहर्ष स्वीकार किया, जिससे वहाँ के सैकड़ों लोग महर्षिजी के प्रति आकर्षित हुए। रामघाट में पंडित कृष्णानन्द से हुए शास्त्रार्थ से प्रभावित होकर क्षेमकरण नामक एक महामूर्ति पूजक व्यक्ति ने अपने आराध्य देवों की लगभग बीस सेर भार की मूर्तियां गंगा में विसर्जित कर दीं। कर्णवास में ही पंडित हीरावल्लभ ने महर्षिजी से निरंतर छ: दिन तक शास्त्रार्थ किया और अंतिम दिन महर्षिजी के मत को स्वीकार करते हुए उन्होंने अपनी आराध्य मूर्तियां नदी में प्रवाहित कर दीं। पंडित हीरावल्लभ की न्यायप्रियता को देखकर महर्षि जी भी भावुक हो गए थे और उन्होंने पंडितजी की मुक्तकंठ से प्रशंसा की थी। ऐसे कई प्रसंग महर्षिजी के जीवनचरित्र में पढ़ने को मिलते हैं।

शास्त्रार्थों के माध्यम से उपस्थित श्रोता वर्ग को भी सत्य-असत्य समझने का अमूल्य अवसर प्राप्त होता है, जिससे धर्म-जागरण होता है। महर्षि दयानन्दजी के धर्मान्दोलन में शास्त्रार्थ की अहम भूमिका रही है। इतना ही नहीं, आर्यसमाज के प्रारंभिक वर्षों में शास्त्रार्थ का प्रचलन अधिक रहा, जिसके परिणामस्वरूप अनेक-अनेक व्यक्ति आर्यसमाज से प्रभावित हुए और उसके

सदस्य बने। संयुक्त पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि प्रदेशों में शास्त्रार्थ के कारण आर्यसमाज को बहुत ही लोकप्रियता प्राप्त हुई। आर्यसमाज के विस्तार में उसके शास्त्रार्थ महारथियों की भूमिका विशेष उल्लेखनीय रही है। इसलिए शास्त्रचर्चा या शास्त्रार्थ का धवल पक्ष भी हमें नहीं भूलना चाहिए। शास्त्रार्थ प्रणाली को निरुत्साहित करने के स्थान पर इसे विधिवत् एवं सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता है। इसीलिए महर्षि दयानन्दजी सत्य-असत्य के निर्णय के लिए विद्वानों के बीच होने वाले शास्त्रार्थ को अत्यन्त हितकारी मानते थे। यही बात उनके प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की भूमिका तथा अनुभूमिकाएं पढ़ने से विदित हो सकती है।

शास्त्र-चर्चा एवं शास्त्रार्थ के प्रति अपनी विरक्ति प्रदर्शित करने के पश्चात् सच्चिदानन्दजी ने कहा- ''यहाँ पर मैं आर्यसमाज के वरिष्ठ विद्वानों को कुछ सलाह देने की धृष्टता करने आया हूँ। मुझे भय है कि वे मेरी सलाह शान्तचित्त से सुनेंगे या नहीं? जो भी हो, मुझे तो अपना कर्त्तव्य ही निभाना है। परिणाम मिले या ना मिले, प्रयत्न तो करना ही चाहिए। यह समझकर मैं थोड़ी-सी सलाह देने की धृष्टता करता हूँ। आशा है विद्वत्जन उसे शांति से सुनेंगे तो जरूर।''

तत्पश्चात् सच्चिदानन्दजी ने जो बातें आर्यसमाज को लक्ष्य में रखकर वहाँ कहीं उन बातों को वहाँ उपस्थित आर्यविद्वानों एवं आर्यश्रोताओं ने आद्यंत शांतचित्त से ध्यानपूर्वक सुनीं। सच्चिदानन्दजी ने अपने वक्तव्य में महर्षि दयानन्दजी को राष्ट्रीय जागरण का सूत्रधार बताया एवं स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज की अग्रिम भूमिका की प्रशंसा की।

अपने इस व्याख्यान में सच्चिदानन्दजी ने आर्यसमाज के खंडन-मंडन के कार्यक्रम पर अपनी टिप्पणी करते हुए लिखा-किन्तु जब महर्षि जी ने १५०-२०० साल पूर्व वेदघोष किया था और आर्यसमाज की स्थापना की थी तब की परिस्थिति और आज की परिस्थिति में बड़ा अंतर है। आर्यसमाज के विद्वानों को सिंहावलोकन करना चाहिए। इतने सालों की जद्दोजहद के बाद, 'क्या पाया और क्या खोया'? यद्यपि प्रायः सभी धर्म-सम्प्रदाय-पंथ आदि कुछ-न-कुछ खंडन-मंडन करते ही रहते हैं। लेकिन जितना खंडन आर्यसमाज ने इतर संप्रदायों का किया है उतना किसी ने भी नहीं किया ।आर्यसमाज की पहचान ही खंडनकर्ता के रूप में हो गई है। इसलिए हम यहाँ थोड़ा-सा विवरण देकर उसे संज्ञान में लेने की सलाह देना चाहते हैं कि इतना सारा खंडन करने के बाद भी किस क्षेत्र में कितनी सफलता मिली?''

इतनी भूमिका बनाने के बाद सच्चिदानन्दजी आर्यसमाज के द्वारा किए जाने वाले मूर्तिपूजा-खंडन के विषय में कहते हैं कि -''आर्यसमाज की सबसे बड़ी चोट मूर्तिपूजा के ऊपर रहती है। वह मानता है कि सभी अनिष्टों की जड़ मूर्तिपूजा है। अतः सबसे पहले व्यक्ति और प्रजा को मूर्तिपूजा से छुटकारा मिलना चाहिये। उसकी मुख्य युक्ति है कि वेदों में कहीं भी मूर्तिपूजा नहीं है। 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' ऐसे वाक्य वे बार-बार प्रस्तुत करते हैं। मानो कि वेदों में मूर्तिपूजा नहीं है। यद्यपि उत्तरवर्ती विद्वानों ने वेदों में से भी कहीं न कहीं मूर्तिपूजा के समर्थन में मन्त्र खोज निकाले हैं। तो भी इन्हें एक तरफ रखकर सामान्य बुद्धि से विचार करें कि मूर्तिपूजा का इतना प्रबल खंडन करने पर भी क्या मूर्तिपूजा से लोग अलग हुए? मूर्तिपूजा का खंडन संत कबीरजी, गुरु नानकदेवजी से लेकर के बहुत से गुरुओं ने किया है। फिर भी आज कबीर मन्दिरों में कबीरजी की मूर्ति और गुरुद्वाराओं में ग्रंथ साहब की पूजा खूब भक्तिभाव से की जाती है। अर्थात् मूर्तिपूजा का खंडन करने वाले भी किसी न किसी रूप से कोई न कोई प्रतीक की पूजा करते ही हैं।

इस विषय में आर्यसमाज बहुत चुस्त है। उसने ना तो किसी मूर्ति को स्वीकार किया, न किसी प्रतीक का। हमने अपने आश्रम में महर्षि दयानन्दजी की प्रतिमा

स्थापित की है। जिसको स्थापित करने वाले एक आर्यसमाजी सज्जन थे। उनका कहना था कि ईश्वर की प्रतिमा नहीं होती यह सही है परन्तु मनुष्य की प्रतिमा तो होती ही है। जब हम राजनेताओं और वीरपुरुषों की प्रतिमाएं स्थापित करते हैं तो हमारे पूज्य धर्मपुरुषों की प्रतिमा क्यों स्थापित न करें? उनकी युक्ति मुझे सही लगती है।मैं तो चाहता हूँ कि जैसे सरदार पटेल और रामानुजाचार्य की बड़ी-बड़ी प्रतिमाएं स्थापित हुई हैं वैसी ही भव्य प्रतिमा महर्षि दयानन्दजी की टंकारा में और अजमेर में स्थापित होनी चाहिए। ताकि हजारों लोग दर्शन करने आयें और प्रेरणा प्राप्त करें । किन्तु शायद यह संभव न हो सके, क्योंकि आर्यसमाज के विद्वान् इसे स्वीकार कर सकेंगे नहीं।''

सच्चिदानन्दजी की यह बात सही है कि आर्यसमाज मूर्तिपूजा का कट्टर विरोधी है। महर्षि दयानन्दजी का सुस्पष्ट मंतव्य था कि-

**''मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है, जिसमें गिरकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है। पुनः उस खाई से निकल नहीं सकता, किन्तु उसी में मर जाता है।''** (सत्यार्थप्रकाश का ११वां समुल्लास)

**क्रमशः**

**८/१७ टाउनशिप, पो. नर्मदानगर,**
**भरूच ( गुजरात )-३९२०१५,**
**मो. ९८७९५२८२४७**

# ऋषि मेला-२०२३ हेतु दुकान ( स्टॉल ) आवंटन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला १७, १८ व १९ नवम्बर (शुक्रवार, शनिवार व रविवार) २०२३ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्यजगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की दुकान लगती हैं। इस वर्ष से स्टॉल किराया २०००=००रूपये प्रति स्टॉल किया गया है। खुले में या अपनी इच्छानुसार स्टॉल लगाना निषिद्ध रहेगा। आप अपना पूर्ण सहयोग देकर इस कार्य में सहयोग करावें। जिन महानुभावों की पहले राशि जमा होगी उस क्रम से स्टॉल का निर्धारण होगा। ऋषि मेला-२०२३ हेतु दुकान (स्टॉल) आवंटन में तीन आधार रहेंगे- १- आर्य धार्मिक पुस्तक, २- हवन सामग्री, ओ३म् ध्वज आदि, ३- दवाईयाँ। आपको जितनी स्टॉल की आश्यकता है उसी अनुरूप राशि बैंक ड्रॉफ्ट या नगद या ऑनलाइन जमा करावें।

**स्टॉल सुविधाः**- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**-७.५×१५ फीट।

**ध्यातव्य- १.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक को राशि की रसीद दिखाकर स्टॉल संख्या प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित की जायेगी। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोटः**- किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

**सम्पर्क-देवमुनि- ७७४२२२९३२७**

# अग्नि सूक्त-४८

**प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर**
**लेखिका - सुयशा आर्य**

**प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी शृंखला में ऋग्वेद के प्रथम सूक्त 'अग्निसूक्त' की व्याख्यान माला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।**
**-सम्पादक**

**स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।।**

हम इस वेदज्ञान की चर्चा में ऋग्वेद के पहले मण्डल के पहले सूक्त की चर्चा कर रहे हैं। इस सूक्त में नौ मन्त्र हैं और हम नौवें मन्त्र की चर्चा कर रहे हैं। इन नौ मन्त्रों में पहले के पाँच मन्त्र विद्या, विज्ञान, शिल्प आदि के लिए हैं। जो भौतिक अग्नि से प्राप्त की जा सकती हैं योग्यतायें उनकी बात कही है और शेष मन्त्र आत्मा अग्नि से प्राप्त होने की बात है अर्थात् संसार में दो ही तो वस्तु जानने योग्य हैं। एक मनुष्य को संसार में आकर संसार को जानना होता है और संसार के माध्यम से जिसे पाना है, उसको जानना होता है। इसलिए इस सूक्त में पाँच मन्त्र सांसारिक वस्तुओं के बारे में है और चार मन्त्र परमेश्वर के विषय में हैं। हमारे लिए दोनों ही चीजें ज्ञातव्य हैं, प्राप्तव्य हैं। अर्थात् संसार को प्राप्त किए बिना भी हमारे संसार में आने का प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। इन दोनों प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिए भूमिका के रूप में यहाँ नौ मन्त्र पढ़े हैं। संसार के पदार्थों को जिस अग्नि से जाना सकता है उसकी प्रशंसा की गयी है, गुणों का व्याख्यान किया गया है उसकी प्रारम्भिक मन्त्रों में, और हमारी आत्मा में जो परमात्मा है उसके गुण कर्म स्वभाव और उसकी प्राप्ति के उपाय बताए हैं। मन्त्रों का देवता अग्नि है, ऋषि मधुच्छन्दा है और छन्द गायत्री है। हमने मन्त्र के शब्दों का अर्थ पहले देखा था, उसको दोहरा लेते हैं। अग्ने, यहाँ सम्बोधन है। कहा गया है कि हे अग्नि रूप परमेश्वर तू प्राप्त करने के लिए कितना सहज है, कितना सरल है, तो कहा जैसे एक पिता को मिलने के लिए बालक के जितने अधिकार हैं, जितनी सरलता है, जितने नियम हैं उतनी ही योग्यता परमेश्वर से मिलने के लिए अपेक्षित है। हम यह सोचते हैं कि परमेश्वर दूर है, मिलता नहीं है, किन्तु हम संसार के सम्बन्धों को आवश्यकता के समय पुकारते हैं और हम यह आशा और अपेक्षा भी रखते हैं कि समय आने पर यह सम्बन्ध वाचक जो व्यक्ति हैं यह हमारा कल्याण करेंगे हमें लाभ पहुँचायेंगे। तो संसार में हमारे जो बड़े हैं, आदरणीय हैं, स्नेही हैं, उनसे हमें जो लाभ मिलता है कि जो संसार की वस्तुएँ हैं उनका बोध होता है प्राप्ति होती है, उनका उपयोग करना आता है। तो मन्त्र ने कहा कि हे परमेश्वर, तू हमारे लिए उतना ही सहज प्राप्तव्य है, जितना किसी बालक के लिए उसका पिता सहज होता है। वेद परमेश्वर को सहज प्राप्तव्य बता रहा है। यहाँ वेद के उदाहरण के दो हेतु हैं, कारण हैं-एक तो इसमें यह समझाया गया कि जो उपासक है परमेश्वर का, उसे यह नहीं समझना चाहिए कि उसे कभी परमेश्वर की प्राप्ति नहीं होगी। परमेश्वर की प्राप्ति तो इसलिए होगी कि हम दूर हैं प्राप्ति दूर की ही होती है। वह निकट होता तो प्राप्ति का उपाय नहीं करना पड़ता। आप कहेंगे कि हम परमेश्वर को सर्वव्यापक मानते हैं तो वह दूर कैसे हुआ? इसको

भी पीछे हम बता चुके हैं। दूरी जो है, वह तीन तरह की होती है- स्थानगत, कालगत, ज्ञानगत दूरी। परमेश्वर के साथ कालगत दूरी सम्भव नहीं है, क्योंकि तीनों ही कालों में वह भी रहता है और तीनों ही कालों में जीवात्मा अर्थात् हम भी रहते हैं। परमेश्वर से हमारी स्थानगत दूरी भी नहीं है, क्योंकि वह सर्वत्र विद्यमान है।

पिता रक्षा करता है पालन करता है और हमारे लिए हमारी आवश्यकताओं को सुलभ कराता है। यह पिता के सम्बन्धों से जुड़ी हुई बात है। कोई पिता यदि ऐसा नहीं करता या कर पाता है तो वह पिता के अधिकारों से वंचित हो सकता है, हो जाता है। इस दृष्टि से वेद ने कहा वो हमारा पिता है। जैसे सांसारिक पिता से हम अपेक्षा करते हैं, इस पिता को उस तरह से करते हुए अनुभव करते हैं। वह पिता जनक भी है, वह पालयिता भी है, वह पाता, रक्षा करने वाला भी है। पिता के तीन काम हुए- जन्म देना, पालन करना और रक्षा करना, अन्यथा पितृत्व का कोई अर्थ नहीं होता। पिता ही उससे स्नेह करता है, उसकी इच्छा करता है और पिता ही रक्षा भी करता है। तो यहाँ परमेश्वर का जो सम्बोधन और उपमान बताया गया है वो उस अर्थ को समझाने वाला है। जैसे संसार में बालक को पिता की प्राप्ति बड़ी सुलभ रहती है, वैसे ही परमेश्वर भी सहज सरल स्वभाव से प्राप्तव्य है। यदि परमेश्वर को पाना कठिन होता, तो वह सामान्य मनुष्यों का विषय ही नहीं होता। यदि वह सामान्य मनुष्यों का विषय है तो वह उतना ही प्राप्तव्य होना चाहिए। वह जो सांसारिक पिता से ऊपर का पिता है, वो भी हमारा अहित करने वाला नहीं है। तो मन्त्र में कहा गया कि हे अग्ने! एक बालक के लिए पिता के समान तू अच्छी तरह से, सुगमता से प्राप्त होने वाला है। जैसा पहले कहा उसकी हमसे स्थानागत व कालगत दूरी नहीं है। अब एक ही दूरी है, यदि हमको उसका पता नहीं लग रहा है तो उसका एक ही कारण है, हमें उसका ज्ञान नहीं हो रहा है। ज्ञान होने पर यह दूरी मिट जाएगी और क्योंकि वह परमेश्वर सब जगह विद्यमान है तो प्रत्येक मनुष्य को अपने हृदय में वह सुलभ है।

यहाँ एक मूल समस्या खड़ी हो जाती है- यदि परमेश्वर इस तरह से लाभ पहुँचाता है, तो वह अन्यायकारी कहलाएगा। तो यहाँ पर यह बताना कि परमेश्वर प्रदत्त फल अनुचित नहीं है, यह बताना वेद मन्त्र का मूल प्रयोजन है। अर्थात् उसके पास जो भी उपलब्धि है वह पूर्व जन्म के कर्मों की है और आज जो उपलब्धि हो रही है या हो सकती है, वो भी उसके कर्मों का परिणाम है। अभी जो उसके क्रियमाण कर्म हैं, वे तत्काल फल नहीं देनेवाले। पहले जो कर्म हमने किए हुए हैं उनका पहले हिसाब होता है, भोग होता है, दण्ड मिलता है। यह परमेश्वर की व्यवस्था बड़ी गहन और जटिल है। इसके लिए आचार्य पतंजलि योगदर्शन में कहते हैं जो कर्मों की गति है बड़ी क्लिष्ट है, जटिल है। यह परमेश्वर द्वारा बनायी गयी है और गलत वह बनाता नहीं गलत करता नहीं। इस दृष्टि से उसने हमें जो कुछ दिया है वह ठीक है, यह हमारी श्रद्धा का, विश्वास का विषय है।

तो मन्त्र ने कहा, हे अग्नि तुम हमारे लिए आसानी से प्राप्त होने वाले बनो, हम जब चाहें तुम्हारे पास आ सकें, जैसे एक बालक सहज भाव से माता-पिता के पास बैठ जाता है। जब तक उसे ज्ञान नहीं है उसको केवल इतना ही पर्याप्त लगता है और ईश्वर को प्राप्त करने पर उसे जो आनन्द और सुख का अनुभव होता है वह भी परमपिता की व्यवस्था का परिणाम है। मन्त्र में बड़ी प्रसिद्ध और सार्थक उपमा है अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को यह वेद पढ़ना चाहिए, समझना चाहिए, क्योंकि वह परमेश्वर हमें सहज प्राप्त होने योग्य है।

---

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीवों को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

**-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२**

# सामगान का आदि-स्त्रोत और उद्देश्य

श्री पण्डित जगत् कुमार शास्त्री

[ गतांक से आगे ]

शिल्क, दालभ्य और प्रवाहण तीन विद्वान् आपस में मिले। शिल्क और दालभ्य दोनों ब्राह्मण थे। प्रवाहण एक राजकुमार था। ये तीनों ही भगवान् के भक्त और साम-गान के विशेषज्ञ थे। आपस में मिलकर तीनों ने ही साम-गान का आरम्भ किया। प्रत्येक ने अपनी अपनी-अपनी विद्या, योग्यता और अनुभव के आधार पर अपने विचार प्रगट किये। उनका पारस्परिक विचार-विमर्श व्यर्थ नहीं गया। उसका बहुत उत्तम परिणाम निकला। अन्त में उन तीनों ने एक नियम निर्धारित किया। उनके अपने ज्ञान में जो कमी थी उसको भी उन्होंने पूरा कर लिया। उनकी यह कथा हजारों वर्षों से भूले-भटके लोगों के लिये पथ प्रदीप का काम देती चली आ रही है।

सभी विद्वानों को उचित है कि जब-जब भी आपस में मिलें, तब-तब ही सभ्यता, सज्जनता और शिष्टतापूर्वक आपस में विचार-विमर्श करें। अपने-अपने विचार, अनुभव और निष्कर्ष प्रकाशित करें। अपनी योग्यता और प्रतिभा के चमत्कार दिखायें। अपनी-अपनी कमियों को दूर करने के प्रयास भी साथ ही साथ करें। कलाकारों को अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन विनम्रता, दृढ़ता, सिद्धान्तवादिता और आत्मविश्वास के साथ करना चाहिये। छिद्रान्वेषण, परनिन्दा, आत्मश्लाघा, चुगलखोरी, दोषारोपण, मिथ्याभाषण, कटुभाषण और विद्वेष ये सभी शर्तें शिष्टता और मानवता से विपरीत हैं। विद्वानों के स्वभाव या चरित्र में ऐसी किसी बात का होना तो और भी अधिक बुरा है। सच तो यह है कि इनमें से जिस किसी में भी कोई ऐसी बुरी बात पाई जाये, वह तो विद्वान् कहलाने का अधिकारी ही नहीं है और न ही वह किसी प्रकार के आदर या स्वागत सत्कार का अधिकारी है। विद्वानों में यदि सिद्धान्तभेद अथवा विचारभेद के आधार पर कोई मतभेद हों, तो ऐसे मतभेदों को कम करने वाले सभी उपाय किये जायें। उन मतभेदों के आधार पर संसार में लड़ाई-झगड़े फैलाना, कटुता को बढ़ाना और दु:खदायक परिस्थितियों को उत्पन्न करना तो बहुत ही बुरा है। ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना के विषय में मतभेदों को हटाना वा कम करना तो सभी विद्वानों के लिये परमावश्यक है, क्योंकि ऐसा करके मानवता का सबसे अधिक हित-साधन किया जा सकता है। शिल्क आदि तीनों विद्वानों के विचार का विषय यही है।

सभी विद्वानों को उचित है कि वे अपनी उत्तम योग्यता बहुमूल्य समय और श्रेष्ठ साधनों का व्यर्थ एवं हानिकारक कार्यों में दुरुपयोग न करें, न होने दें। अपने समय और साधनों का सदुपयोग सदा ही किया करे। जो भी कार्य आरम्भ करें, उसे भली प्रकार सोच समझ कर दृढ़ता से करें और पूरा करें। जिस किसी भी विषय पर वार्तालाप करें, उसे किसी उत्तम और निर्णायक स्थल पर पहुँचाकर समाप्त करें। किसी उपयोगी और स्पष्ट परिणाम अथवा निष्कर्ष पर पहुँचना ही विद्वानों की विचार-गोष्ठियों का मुख्य उद्देश्य होना चाहिये। भ्रान्तियाँ फैलाने और राग-द्वेषों को भड़काने वाले वक्तव्यों, लेखों और कार्यों से सभी को बचाना चाहिये। गम्भीर विषयों पर सब वार्तालाप भी गम्भीरतापूर्वक हों। इस गम्भीरता का प्रकाशन शब्दों से भी हो, चेष्टाओं से भी, भाव-भंगिमाओं से भी और सम्भाषण वा लेखन की शैली से भी। एवमेव देश, काल तथा अपनी और प्रतिपक्षी की सभी परिस्थितियों को भी ध्यान में रखना चाहिये। किसी से व्यर्थ बातें करना, शुष्क-विवाद करना, किसी का अपमान अथवा दिल दुखाने वाली बातें करना, अथवा आत्म-श्लाघा करना और डींगें मारना ठीक नहीं। अवसर के विपरीत अथवा किसी की हानि के विचार से विवाद छेड़ना भी ठीक नहीं

है। यदि अपने साथियों के ज्ञान वा आचरण में कोई त्रुटि हो, तो उनको भी सभ्यता और सहानुभूतिपूर्वक समझाया जाये। समझाने का ढंग ऐसा हो जो दूसरे को पसन्द आये, बुरा न लगे। यह नीति का एक सिद्धान्त है कि अपनी भूल-चूक, कमी या त्रुटि को स्वीकार कर लेना बड़ाई का निशान है। इसी प्रकार यह भी एक सिद्धान्त है कि अपनी किसी कमी या कमजोरी को जान लेता है, तब वह उसको दूर करने के लिये जी-जान से प्रयत्न भी किया करता है और उसे दूर करके ही दम लेता है। यदि कोई मित्र या हितैषी किसी को उसकी किसी त्रुटि या दुर्बलता से सूचित करें, तो उचित है कि हितैषी की बातों को ध्यान से सुने और त्रुटियों को दूर करे। ऐसे अवसरों पर हितैषियों का सच्चे हृदय से धन्यवाद भी किया जाये।

शिल्क और दालभ्य के संवाद में उद्गीथ वा साम-गान की जो गतियां बतलाई गई हैं, वे इस प्रकार हैं-

१- साम की गति स्वर है।

२- स्वर की गति प्राण है।

३- प्राण की गति अन्न है।

४- अन्न की गति जल है।

५- जल की गति वह लोक अर्थात् स्वर्गलोक है।

६- स्वर्गलोक की गति पृथिवी लोक है।

७- पृथिवीलोक की गति आकाश है।

इस अनुक्रम में 'गति' शब्द से कारण, स्रोत, उद्गम-स्थल अथवा ठिकाना ऐसा भाव लीजिये। वेद-पाठ स्वरों के आधीन होता है। व्याकरण-शास्त्र के अनुसार स्वर तीन हैं- १. उदात्त, २- अनुदात्त, और ३- स्वरित। जब इन स्वरों के अनुसार वेद-पाठ होता है, तब विशेष-विशेष शब्दों एवं अक्षरों को विशेष-विशेष ध्वनियों, घोषों, मात्राओं और प्रकारों के अनुसार बोला जाता है। इस प्रकार वेदपाठ की कुछ विशेष विधियां रीतियां या शैलियां सुनिश्चित हैं। स्वरों के अनुसार उच्चारण का अर्थ-विचार में भी विशेष योग होता है। यह बात ठीक वैसी ही है जैसे कि आजकल भी हमारी बोलचाल की भाषा में उच्चारण के ढंग और प्रकार वा स्वर का प्रभाव होता है। यहाँ हमें खेद के साथ यह भी लिखना पड़ रहा है कि वेदों के स्वर सहित पठन-पाठन पर आजकल कुछ भी ध्यान नहीं दिया जा रहा। इस उपेक्षा के परिणामस्वरूप वैदिक स्वर विज्ञान तो नष्ट हो ही रहा है, वेद के अर्थ विचार की उलझनें भी कम नहीं हो रहीं। पाठशालाओं और पाठ विधियों में वैदिक-स्वर- विज्ञान के पठन-पाठन और अभ्यास का सुप्रबन्ध अवश्य ही होना चाहिये।

संगीत-शास्त्र अर्थात् गन्धर्व-वेद के अनुसार स्वर सात हैं। इन सात स्वरों में ही सब प्रकार के रागों और सब प्रकार की रागनियों के गान होते हैं। सात स्वर ये है १. निषाद २. ऋषभ ३. गान्धार ४. षड़ज ५. मध्यम ६. धैवत और ७. पंचम। संगीत शास्त्र के अभ्यास में सा, रे, गा, मा, पा, धा, नी के उच्चार और अलाप से इन सात स्वरों का ही बोध और अभ्यास दृढ़ किया जाता है। इन सातों स्वरों के ही मात्रा-भेद और मेल-मिलाप से ही सैंकड़ों प्रकार के राग-रागनियों की उत्पत्ति होती है। चिड़ियों की चूं-चूं, शेर की दहाड़ और हाथी की चिंघाड़ आदि सभी प्रकार की ध्वनियां इस सात स्वरों के अन्तर्गत ही होती हैं।

स्वरों और उनकी ध्वनियों की मात्राओं का ठीक-ठीक आधार प्राण है। प्राण से ही स्वर की उत्पत्ति होती है। प्राण का आधार अन्न है। अन्न का आधार जल है। जल का आधार स्वर्गलोक, द्यु-लोक अर्थात् ऊपर का वह आकाश है जहाँ पर बादल बनते हैं।

इस पृथिवी से सापेक्ष विचार-प्रसंग में उस लोक को स्वर्गलोक कहते हैं। ऊपर से आकर जल इस पृथिवी पर ही ठहरता है। इस पृथिवी का और इस पृथिवी जैसे ही अन्य नक्षत्रों का, जिनमें कि ये पंच महाभूतों के मेल के खेल=विकार और प्राणियों के अस्तित्व हैं, उन सब का आधार यह आकाश ही है। आकाश निराकार है और असीम अर्थात् अन्तरहित है।

**न कोई इब्तिदा इसकी, न कोई इन्तहा इसकी।**
**मगर हद्दे-नजर को, आसमां कहना ही पड़ता है।।**

शब्द आकाश का ही गुण है। शब्दों के मेल अर्थात् मात्राओं के विचारपूर्वक शब्द-संग्रह करने से ही गीत बनते और बनाये जाते हैं। फिर वे गीत सुर, ताल और लय के साथ गाये जाते हैं। इस प्रकार आकाश के पश्चात् पुनरपि स्वर का विचार और अभ्यास आरम्भ हो जाता है और स्वर के पश्चात् प्रण आदि के विचार का क्रम आरम्भ हो जाता है। आकाश पर पहुँचकर यही विचार और अभ्यास का क्रम फिर आरम्भ हो जाता है। यह एक चक्करदार और कभी भी समाप्त न होनेवाला अनुक्रम है। निराकार और असीम होने के साथ ही यह आकाश नित्य भी है। यद्यपि पृथिवी के साथ सापेक्ष विचार में कहीं-कहीं आकाश की उत्पत्ति का भी उल्लेख मिलता है। यथा- ''आकाशः सम्भूतः।'' ऐसे सब वर्णन तात्त्विक नहीं हैं। वास्तव में आकाश, काल और दिशा ये आदि-अन्त और उत्पत्ति एवं विनाश से रहित ही हैं।

सर्वव्यापक होने के कारण ईश्वर का एक नाम आकाश भी है। वेदान्त-दर्शन के प्रथम अध्याय, प्रथम पाद के बाइसवें सूत्र में महर्षि व्यास जी लिखते हैं कि-

''सर्वव्यापक, निराकार, आरम्भ रहित और अन्तरहित होने से ईश्वर को आकाश भी कहते हैं।'' अतः सिद्ध हुआ कि ईश्वर की प्राप्ति, उसका बोध और ईश्वरीय आनन्द का उपभोग ही उद्गीथ वा साम-गान का उद्देश्य है और ईश्वर ही शब्द-शास्त्र, संगीत शास्त्र, छन्द-शास्त्र और स्वर-विज्ञान का आदि स्रोत है।

आइये अब इस कथा पर एक-दूसरे दृष्टिकोण से विचार करें। जिस उद्गीथ वा साम-गान का वर्णन इस कथा में किया गया है, वह केवल मात्र व्याकरण-शास्त्र अथवा संगीत-शास्त्र का परिभाषिक साम-गान ही नहीं है, अपितु मानव-जीवन के ताने-बाने का ही एक सुर-ताल बद्ध, छन्दोबद्ध, सरस-संगीतमय रूप है। वह मनुष्य के विचारों, संकल्पों, उसकी परिस्थितियों, घटनाओं, भावनाओं और अनुभूतियों एवं संवेदनाओं का एक मनोहर एवं प्रशंसनीय कुसम गुच्छ है। ऐसा मधुर, सुखद, सन्तुलित रसमय-जीवन वास्तविक मानव-जीवन है। अन्यथा तो-

**सुबह होती है, शाम होती है।**
**उम्र यूं ही तमाम होती है।।**

मधुर, सुखद, सन्तुलित और रसमय जीवन ही मनुष्य का चरम लक्ष्य है, और होना चाहिये। प्रत्येक मनुष्य को इसकी प्राप्ति के लिये ही अपना पूरा पुरुषार्थ करना चाहिये। इस मानव-जीवन के मुख्य उद्देश्य वा आदर्श को कैसे प्राप्त किया जाये? अब यह विचार करते हैं।

१- दालभ्य, साम-गान की गतियों, प्रगतियों का वर्णन करता है और स्वर्गलोक को साम-गान की अन्तिम गति कहता है।

२- शिल्क पृथिवी-लोक को साम-गान की अन्तिम गति बताता है।

३- प्रवाहण आकाश को साम-गान की अन्तिम गति कहता है।

पार्थिव-दृष्टि से आकाश अन्तरिक्ष, पोल और आत्मिक दृष्टि से ईश्वर, ये दो अर्थ 'आकाश' शब्द के हैं। दोनों ही अपने-अपने प्रसंग में ठीक हैं।

दालभ्य एक समझदार और दुनियादार आदमी की सी बातें करता है। यह स्वर्ग को अर्थात् सुख-विशेष और सुख की प्राप्ति के साधनों को ही साम-गान का उद्देश्य कहता है। वह यह भी समझता है कि गान से प्रसन्नता उपजती है, और एक चक्र के समान प्रसन्नता प्राप्ति का यह क्रम चलता रहता है, चक्र घूमता रहता है। दालभ्य का दृष्टिकोण पूर्णतया सांसारिक है। आज भी हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि लोगों ने संगीत-विद्या को अपने मौज-मजे और भोग विलास का साधन बना रखा है। संगीत-माधुरी की तानें आत्मा की तृप्ति के लिये नहीं, अपितु कर्ण-रस की प्राप्ति के लिये आलापी जाती हैं।

शिल्क का दृष्टिकोण दालभ्य से अधिक विस्तृत है। वह व्यक्तिवाद और व्यष्टिवाद से ऊपर उठ चुका है। यह सब की भलाई में अपनी भलाई समझता है। उसका कथन है कि इस सम्पूर्ण भूमण्डल की भलाई ही साम-गान का अन्तिम उद्देश्य है। इस भू-मण्डल के प्रत्येक कण से मस्ती के तरानों, मधुर गीतों और मधुर स्वर-लहरियों के झरने झर रहे हैं, दरिया बह रहे हैं। चश्मे उबल रहे हैं और तार बज रहे हैं। जिस केन्द्र-बिन्दु पर शिल्क खड़ा है वहाँ यह जातीयता और राष्ट्र-भक्ति का पक्षपाती है। समूह-गत विचार से वह सार्वभौमिक सुख-शान्ति का पक्षपाती है। वह विश्वप्रेमी है। तुलनात्मक रूप में वह वास्तविकता को अधिक स्पष्टता से देखता समझता है। दालभ्य से वह आगे बढ़ चुका है, ऊपर उठ चुका है। वह व्यक्ति गत स्वार्थों से भी ऊपर उठ चुका है। हम उसे मध्यम श्रेणी का प्रतिनिधि समझते हैं।

प्रवाहण शिल्क के विचारों से पूर्णतया सहमत नहीं है। उसे शिल्क के विश्व-प्रेम और अन्तर्राष्ट्रीयवाद में भी खराबी दिखाई देती है। वह पूर्णतया ईश्वरोपासक है। स्वार्थ के बन्धन वह तोड़ चुका है। भौतिकवाद को वह छोड़ चुका है। यह तो परोपकार के चक्कर से भी पार निकल चुका है। उसका कथन है कि उद्गीथ वा साम-गान की अन्तिम गति तो वह सर्वव्यापक, सर्वोपरि अनन्त शक्ति और निराकार परमेश्वर ही है। प्रवाहण की बात सुस्पष्ट भी है, निर्दोष भी। दर्शन-शास्त्र, व्याकरण-शास्त्र, संगीत-शास्त्र, सांसारिक दृष्टान्त और विद्वानों की अनुभूतियां एवं संवेदनायें सभी प्रवाहण के पक्ष में हैं।

अपने कथन की पुष्टि के लिये प्रवाहण एक प्राचीन ऐतिहासिक घटना का वर्णन करके बताता है कि साम-गान का जो उद्देश्य मैं समझता हूँ, वही महर्षि सुधन्वा भी समझते थे और उन्होंने उदर शाण्डिल्य को यह रहस्य बतलाया था। उन्होंने उदर शाडिल्य से यह भी कहा था कि जब तक तेरी सन्तान साम-गान अर्थात् ईश्वरोपासना का अनुष्ठान करती रहेगी, तब तक वह सभी प्रकार से उन्नत होती रहेगी। इसके साथ ही उन्होंने यह भी बतलाया था कि ईश्वर भक्ति पर किसी एक परिवार या जाति का ही एकाधिकार नहीं है। प्रत्येक मनुष्य को ईश्वरोपासना का एक-सा ही अधिकार प्राप्त है। जो कोई भी ईश्वरोपासना का अनुष्ठान विधिपूर्वक करेगा, वही सुख शान्ति को पायेगा। लगातार साधना के द्वारा वह अन्त में मोक्ष पद को प्राप्त करेगा।

**आर्य मार्तण्ड से साभार.....**

## परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम

| | | | |
|---|---|---|---|
| ०१. | दम्पती शिविर | – | २४ से २७ अगस्त-२०२३ |
| ०२. | डॉ. धर्मवीर स्मृति दिवस | – | ०६ अक्टूबर-२०२३ |
| ०३. | साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर | – | २९ अक्टूबर से ०५ नवम्बर-२०२३ |
| ०४. | ऋषि मेला | – | १७, १८, १९ नवम्बर-२०२३ |

कृपया शिविर में भाग लेने के इच्छुक शिविरार्थी पूर्व से ही प्रतिभाग की सूचना दें।

**वैचारिक क्रान्ति के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।**

# राष्ट्रीय एकता की समस्या

डॉ. भवानीलाल भारतीय

**विद्वान् लेखक ने प्रस्तुत लेख में राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त किए हैं। पांच दशक पश्चात् भी विषय की प्रासंगिकता यथावत् है। अतः इस लेख को पुनः प्रकाशित किया जा रहा है।**

**-सम्पादक**

भारत में बढ़ती हुई अल्पसंख्यकों की साम्प्रदायिक प्रवृत्तियों का निग्रह करने में असमर्थ कांग्रेस की केन्द्रीय सरकार ने कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में विस्मृति के गर्भ में सुप्त राष्ट्रीय एकता परिषद् की त्रिदिवसीय गोष्ठी आयोजित की। राजनैतिक दलों, छात्रों, व्यापारियों, शिक्षा शास्त्रियों, मजदूर संगठनों तथा केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों के कुछ प्रतिनिधि आमन्त्रित किये गये। तीन दिन तक वाद-विवाद, विचार विनिमय, आरोप-प्रत्यारोप का बाजार गर्म रहा और परिषद् के अन्तिम दिन एक सर्वसम्मत विज्ञप्ति प्रकाशित कर यह समझ लिया गया कि साम्प्रदायिक समस्या का निदान हो गया। राष्ट्रीय एकता की नींव सुदृढ़ हो गई, विघटनकारी तत्त्व कुचल दिये गये और साम्प्रदायिक सौहार्द का स्वप्न पूरा हो गया, परन्तु यह शुतुर्मुर्ग की नीति है।

हमारे नेता जब-जब देश में दो सम्प्रदायों के बीच दंगे होते हैं, अपनी आकुलता और व्याकुलता को प्रकट करते हुये साम्प्रदायिक संगठनों को कुचलने की कसमें खाते हैं, भविष्य में ऐसे गर्हित दंगे नहीं होंगे, इसका बार-बार विश्वास दिलाते हैं, परन्तु इन दंगों की पुनरावृत्ति होने पर पुनः अपने आपको अत्यन्त असहाय और निरीह महसूस करते हुये कबूतर की तरह अपनी चोंच को गर्दन में छिपा कर मौन धारण कर लेते हैं। कोई यह सोचने का कष्ट नहीं करता कि अन्ततोगत्वा ये दंगे होते क्यों हैं? कौन से समाज विरोधी तत्त्व इनके लिये उत्तरदायी हैं तथा उन तत्त्वों का शमन किस प्रकार किया जा सकता है? नेतागण बार-बार अल्प संख्यकों की रक्षा करने की दुहाई देते हैं, बहुसंख्यकों को कोसते हैं, उन्हें असहिष्णु कहते हैं, परन्तु यह कभी नहीं सोचते कि जब तक तथाकथित अल्पसंख्यक वर्गों के लोग देश की समान सांस्कृतिक धारा में अपने आपको विलीन नहीं कर लेंगे, तब तक इस समस्या का निदान त्रिकाल में भी सम्भव नहीं है। जिसको 'सम्प्रदाय' या साम्प्रदायिकता कहा जाता है, वह वस्तुतः क्या है? जिस प्रकार 'रिलीजन' शब्द के पर्याय के रूप में धर्म को अपना कर उसके उदात्त और व्यापक अर्थ को संकुचित किया गया, उसी प्रकार 'सम्प्रदाय' शब्द की भी दुर्गति की गई है। किसी भी शब्द का व्युत्पतिलभ्य अर्थ ही वास्तविक अर्थ होता है, आरोपित का महत्त्व नहीं होता।

'सम्प्रदाय' शब्द संस्कृत का है, जो भारत के प्राचीन वाङ्मय में अत्यन्त गौरवपूर्ण अर्थ व्यक्त करता है। पूर्वजों का यह दाय-उत्तरदायित्व, विरासत जो सम्यक् रूपेण उचित प्रकार से हमें प्राप्त हुई है, सम्प्रदाय कहलाती है। हमारी प्राचीन विचारधारा धर्म-दर्शन परम्परा सभी कुछ हमारा दाय है। 'सम्प्रदाय' का प्रयोग शैव, वैष्णव, शाक्त, गाणपत्य आदि हिन्दू धर्मान्तर्गत विभिन्न मत विश्वासों के लिये भी हुआ है तथा शंकर, रामानुज, मध्व आदि मध्यकालीन दार्शनिकों के मतों और सिद्धान्तों के लिये भी प्रयुक्त हुआ है। इस दृष्टि से 'सम्प्रदाय' शब्द का गौरव और महत्त्व सर्वविदित है। पुनः उसे Communal या 'फिरके' का पर्याय बना कर एक श्रेष्ठ शब्द की गर्हित और निन्दित अर्थों में प्रयुक्त करना अनौचित्य की पराकाष्ठा है।

प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी विचारधारा या जीवन पद्धति से बँधा होता है। अतः इस अर्थ में संसार का प्रत्येक मानव साम्प्रदायिक है। अपने आपको गांधी जी की विचारधारा का अनुयायी मानने वाले कांग्रेसी भी

गांधी सम्प्रदाय के हैं तथा मार्क्स और लेनिन की राजनैतिक और आर्थिक विरासत को आंख मून्द कर ढोने वाले कम्युनिस्ट भी इस अर्थ में सम्प्रदायवादी ही हैं। सम्प्रदाय विहीन मानव जाति की कल्पना करना ही दुष्कर है, अब 'अल्पसंख्यक' और 'बहुसंख्यक' शब्दों के त्रुटि प्रयोग पर विचार करें। आज जब कभी और जहाँ कहीं हिन्दू, मुसलमान के बीच संघर्ष होता है, उसे स्पष्ट रूप से हिन्दू, मुस्लिम संघर्ष का नाम न देकर 'दो सम्प्रदायों के बीच दंगे' या अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक वर्ग के दंगे की संज्ञा दी जाती है। मैं नहीं समझता कि इस द्राविड प्राणायाम की क्या आवश्यकता है? सम्भवत: यह तर्क दिया जाता है कि इन गोलमोल शब्दों का प्रयोग करने से हिन्दू, मुसलमानों की भावनायें भड़केंगी नहीं और रेडियो में दंगे का समाचार सुनकर या अखबार में पढ़कर अन्यत्र निवासी लोगों में द्वेष की भावना का संक्रमण नहीं होता, परन्तु यह दलील देते हुए इस बात को वे लोग क्यों भूल जाते हैं कि आज जनसाधारण इतना मूर्ख नहीं है कि वह दो वर्गों के बीच संघर्ष होने या अल्पसंख्यकों और बहुसंख्यकों के अभिधार्थ को समझने में असमर्थ रहा हो। आज भंगी और अन्त्यज के लिए लोग लाख 'हरिजन' शब्द का प्रयोग करें, कट्टरपन्थी लोगों की धारणा उनके प्रति वैसी ही है। अल्पसंख्यक या बहुसंख्यक शब्द का प्रयोग ही समस्या का निदान नहीं है।

वस्तुत: इन शब्दों का इन अर्थों में प्रयोग ही गलत है। क्या हिन्दुओं से इतर मुसलमान, ईसाई, पारसी और सिक्ख ही अल्पसंख्यक हैं। क्या हिन्दुओं में प्रचलित शतश: सम्प्रदायों के अनुयायी अल्पसंख्यक नहीं है? शैव, वैष्णव, आर्यसमाजी, कबीरपंथी, रामस्नेही, सभी तो सापेक्षिक रूप से अल्पसंख्यक हैं और जिन्हें अल्पसंख्यक कहा जाता है, उनमें पाये जाने वाले फिरके भी सापेक्षिक रूप से अल्पसंख्यक हैं। सुन्नी मुसलमानों की तुलना में अहमदिया सम्प्रदाय के अथवा आगाखानी मुसलमान अल्पसंख्यक हैं। रोमन कैथोलिक ईसाईयों की अपेक्षा प्रोटेस्टेन्ट अल्पसंख्यक हैं। इस परिप्रेक्ष्य में यदि हम अल्पसंख्यकों की अधिकार रक्षा का नारा लगायें तो वह कितना खोखला होगा, यह स्पष्ट है? केवल मुसलमान या ईसाइयों के अधिकारों की सुरक्षा का ही डिंडिम घोष करना पर्याप्त नहीं होगा। शतश: और सहस्त्रश: धार्मिक अल्पसंख्यक समुदायों के लोग जो हिन्दू जाति में विद्यमान हैं, वे भी अपने पृथक् अधिकारों की चर्चा नहीं करेंगे।

वस्तुत: तथ्य तो यह है कि भारत में धर्म के नाम पर अत्यन्त सहिष्णुता प्राचीन काल से चली आ रही है। तभी तो शतश: सम्प्रदायों में विभक्त हिन्दू समाज के विभिन्न घटकों-शैवों, वैष्णवों, शाक्तों, आर्यसमाजियों, कबीर पंथियों, दादू और नानक, रैदास और चरणदास के अनुयायियों ने कभी यह आवाज नहीं उठाई कि उनके विश्वास खतरे में हैं, अथवा उन्हें साम्प्रदायिक आधार पर संरक्षण की आवश्यकता है। बात तो यह है कि जब स्वतन्त्र भारत के संविधान ने सभी देशवासियों के धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक अधिकारों की पूर्ण स्वतन्त्रता घोषित कर दी, पुन: धर्म या विश्वास के आधार पर अल्पसंख्यकों के अधिकारों की दुहाई देना सत्य का अपलाप करना ही है। भारतीय संविधान की दृष्टि से न कोई बहुसंख्यक है और न कोई अल्पसंख्यक। हमारा धार्मिक मत, विश्वास चाहे कुछ भी क्यों न हो, हम राजनैतिक और सामाजिक दृष्टि से वे सभी अधिकार भोग सकते हैं, जो विधान ने हमें भारत का नागरिक होने के नाते प्रदान किये हैं।

यह तो हुआ अल्पसंख्यकों के नाम पर हौवा खड़ा करने की कुप्रवृत्ति का स्पष्टीकरण। अब हम पुन: 'साम्प्रदायिकता' की समस्या पर आते हैं। इस समस्या का जितना ढिंढोरा पीटा जाता है या उस पर जितना हो हल्ला मचाया जाता है, उसके उत्पन्न होने के कारणों की उतनी ही कम मीमांसा की जाती है । क्या आज तक उपदेश देने में पटु हमारे नेताओं ने साम्प्रदायिकता की

कोई सम्मत परिभाषा निर्धारित की है। हिन्दू साम्प्रदायिकता को पानी पी पीकर कोसने वाली सुभद्रा जोशी की -दृष्टि में यदि कुराजशर्म दिल्ली के कांग्रेसी मुसलमान सिकन्दर बख्त से विवाह कर ले तो यह अत्यन्त प्रगतिशील कार्य हो जायेगा, परन्तु किसी काश्मीर किशोरी का बलात्कार से अपहरण किये जाने पर उसकी रक्षा की आवाज उठाई जाती है तो यह साम्प्रदायिकता है। जनसंघ, हिन्दू महासभा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ तो शत प्रतिशत साम्प्रदायिक हैं, परन्तु उत्तर प्रदेश के लाखों मुसलमानों के लिये डॉ. फरीदी द्वारा पृथक् राज्य की मांग करना या औरंगाबाद में तामीरे मिल्लत के मंच से विद्वेषपूर्ण भड़काने वाले व्याख्यान देने वाले लोग असाम्प्रदायिक और निर्दोष हैं। विचारों की यह द्वैधता आपत्तिजनक है। यह समझ में नहीं आता कि जो लोग हिन्दुओं की बहुसांख्यिक साम्प्रदायिकता को दोषी ठहराते हैं, वे अल्प संख्यकों की साम्प्रदायिकता के प्रति आंखें क्यों मूंद लेते हैं? क्या अल्प संख्यकों की साम्प्रदायिकता उन्हें उनकी दृष्टि में क्षम्य हैं? यह तो कहा जाता है कि साम्प्रदायिक दंगों का दमन करने के लिये (१) शान्ति और सौहार्द का वातावरण बनाया जाना चाहिये, (२) जिला प्रशासकों को निर्ममता पूर्वक दंगाइयों को दण्ड देना चाहिये। (३) समाचार-पत्रों को वैमनस्य पैदा करने वाले समाचार नहीं छापने चाहियें, परन्तु यह कोई नहीं कहता कि आखिर दंगा हुआ क्यों? उसकी जड़ कहाँ है। दंगे के मूल कारण का पता चलता है तो ये बातें सामने आती हैं- जाने या अनजाने गाय का वध कर हिन्दुओं की भावनाओं को चोट पहुँचाई गई, किसी हिन्दू महिला का अपहरण किया गया, हिन्दू मन्दिर या मूर्ति को क्षति पहुंचाई गई। धार्मिक यात्रा या जुलूस पर संगठित रूप से आक्रमण किया गया अथवा हिन्दू नारी का अपहरण हुआ आदि। दंगों के कारण कोई नवीन नहीं हैं, अंग्रेजी शासन में भी इन्हीं कारणों को लेकर दंगे होते थे। विशुद्ध रूप से देखा जाय तो यह समस्या अपराधी को दण्ड देकर सुलझाई जा सकती है, परन्तु यार लोगों को तब तक चैन नहीं पड़ता जब तक वे इन अपराधों को साम्प्रदायिक रंग न दे दें। साम्प्रदायिक का हल्ला तो बहुत किया जाता है, परन्तु इन अपराधों के अभ्यस्त वर्ग के लोगों को हमारे शासक वर्ग के लोग यह उपदेश कभी नहीं देते कि वे ऐसे कुकृत्यों से बाज आयें जो बहुसंख्यक वर्ग के लोगों की भावना को ठेस पहुँचाने वाले हैं।

**आर्यमार्तण्ड, १५ फरवरी १९६९ से साभार**

## दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में कई वर्ष से संचालित आयुर्वैदिक चिकित्सालय का पुनः आरम्भ २६ अगस्त को किया गया है। यह चिकित्सालय सोमवार को छोड़ सप्ताह में ६ दिन मार्च से अक्टूबर सायं ५ से ७ बजे तक व नवंबर से फरवरी सायं ४ से ६ बजे तक दो घण्टे खुलेगा।

इसमें वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक की सेवा उपलब्ध है। चिकित्सा परामर्श व चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। यदि आप अपने धन को इस पुण्य कार्य में लगाना चाहते हैं, तो परोपकारिणी सभा के बैंक खाते में सहयोग भेज सकते हैं। सहयोग भेजकर ८८९०३१६९६१ पर सूचित अवश्य कर देवें।

**- मन्त्री**

उपनिषदों की कहानियाँ-

# परम-पद

साधु सोमतीर्थ

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि कमल के पुत्र उपकोशल ने आचार्य सत्यकाम जाबाल के आश्रम में बारह वर्ष तक रहकर ब्रह्मचर्य का पालन और अग्नि-विद्या का सेवन किया। जब उसकी शिक्षा पूर्ण हो चुकी तो आचार्य ने अपने दूसरे शिष्यों का तो समावर्तन संस्कार किया और उनको नियमानुसार उन-उन के घरों को भेज दिया, परन्तु उपकोशल का समावर्तन संस्कार आचार्य ने नहीं किया। उसको उन्होंने यथा पूर्व ही अपने आश्रम में रखा। घर जाने की अनुमति उसे नहीं मिली।

आचार्य की धर्मपत्नी ने जब यह अवस्था देखी तो उसने आचार्य से कहा- भगवन्! इस उपकोशल ने भी सभी शास्त्रों को नियमानुसार पढ़ा है, सब नियमों का पालन किया है, सब अग्नियों का सेवन किया है। ऐसा न हो कि कोई इस बात को देखे-सुने और आपकी निन्दा करे, अतः यही उचित प्रतीत होता है कि दूसरे विद्यार्थियों के समान ही उपकोशल का भी समावर्तन-संस्कार कर दिया जाये और उपदेश देकर, इसे भी इसके घर भेज दिया जाये।

परन्तु आचार्य ने अपनी पत्नी की बात सुनकर भी अनसुनी कर दी। वे चुपचाप ही आश्रम से न जाने कहाँ? किसी गुप्त स्थान पर चले गए।

आचार्य की इस निष्ठुरता को देख कर उपकोशल के दिल पर भारी चोट लगी। उसने दुःखी होकर खाना-पीना भी छोड़ दिया। आचार्य की पत्नी ने पूछा- ''बेटा उपकोशल! तू खाना क्यों नहीं खाता?''

उपकोशल के उत्तर दिया-माताजी! नाना प्रकार की कामनायें मेरे दिल को बेचैन कर रही है। खाना-पीना मुझे अच्छा नहीं लगता।

कहते हैं कि इसके पश्चात् कुछ अग्नियाँ प्रज्वलित हुई। वे आपस में कहने लगी- ''यह ब्रह्मचारी उपकोशल बहुत उत्तम तपस्वी है। इसने पूरी लग्न, श्रद्धा और विधिपूर्वक हमारी सेवा की है। अब यही उचित प्रतीत होता है कि हम इसको कुछ उपदेश दें और सम्पूर्ण गुप्त रहस्य ज्ञान और विज्ञान इसके सामने सुस्पष्ट कर दें।''

यह निश्चय करके उन्होंने उपकोशल से कहा-

''उपकोशल प्राण ब्रह्म है, कम् अर्थात् सुख ब्रह्म है, खम् अर्थात् आकाश ब्रह्म है।''

उत्तर में उपकोशल ने कहा ''भगवन्! प्राण ब्रह्म है। इसे तो मैं भी जानता हूँ, परन्तु 'कम्' और 'खम्' भी ब्रह्म है, यह मैं नहीं जानता।''

तब अग्नियों ने कहा- ''जो कम् है, वही खम् है, और जो खम् है, वही कम् है। इसके साथ ही जो प्राण है, वही कम् और खम् भी है।''

उपकोशल ने उनकी बात को ध्यान से सुना, सोचा, समझा। इसके पश्चात् गार्हपत्य-अग्नि ने उपकोशल को उपदेश दिया-

''अग्नि, अन्न और आदित्य अर्थात् सूर्य ये तीनों ही मेरे सहायक और सहयोगी हैं। सूर्य में जिस शक्ति का प्रकाश है वह मैं ही हूं। हाँ वह मैं ही हूँ। इस विषय में तू कुछ भी सन्देह न कर। जो कोई इस रहस्य को भली प्रकार समझ लेता है, वह गार्हपत्य- अग्नि-विद्या का प्रयोग करता है। ऐसा करके वह सभी पापों का अन्त कर देता है, वह सम्मान और प्रसिद्धि को प्राप्त करता है, उसके वंश की खूब वृद्धि होती है, दीर्घ आयु को प्राप्त करता है। उसके बाल-बच्चे छोटेपन में नहीं मरते। अग्नियाँ इस लोक में भी उसकी रक्षा करती हैं और परलोक में भी। जो इस प्रकार समझकर विधिपूर्वक अग्नि-विद्या का पालन करता है, वह अपने जीवन में पूर्णतया सफल

होता है।''

इसके पश्चात् दक्षिण-अग्नि मे उपदेश देते हुए उपकोशल से कहा- ''जल, दिशायें और उपदिशायें, नक्षत्र और चन्द्रमा ये मेरे सहायक और सहयोगी हैं। चन्द्रमा में जिस शक्ति का प्रकाश है, मैं ही हूँ। हाँ वह मैं ही हूँ। इस विषय में तू किसी भी प्रकार सन्देह न कर। जो इस दक्षिण-अग्नि-विद्या को इस प्रकार विधिपूर्वक जानता समझता है और नियमानुसार इसके अनुकूल आचरण करता है, वह पापों का अन्त कर देता है, वह सम्मान और प्रसिद्धि को प्राप्त करता है, वह पूरी और दीर्घ आयु को प्राप्त करता है, उस का जीवन सब प्रकार के दोषों, पापों और मलों से रहित होता है, उसकी वंश-वृद्धि होती है, उसके बाल-बच्चे छोटी आयु में नहीं मरते। इस लोक में और परलोक में भी हम अग्नियाँ उसकी रक्षा करती है।''

इसके पश्चात् आह्वनीय अग्नि ने उपकोशल को उपदेश दिया- ''प्राण, आकाश, वायुलोक और विद्युत् ये मेरे सहायक और सहयोगी हैं। इस विद्युत् में जो शक्ति पाई जाती है, वह मैं ही हूँ, हाँ मैं ही हूँ। इस विषय में तू किसी भी प्रकार का सन्देह न कर। जो आह्वनीय अग्नि-विद्या को इस प्रकार विधिपूर्वक जानता है और इसके अनुसार आचरण करता है, वह सभी पापों का अन्त कर देता है, वह सम्मान और प्रसिद्धि प्राप्त करता है। वह दीर्घ आयु को प्राप्त करता है, उसका जीवन शुद्ध और पवित्र होता है। उसके वंश की वृद्धि होती है, उसके बाल-बच्चे छोटी आयु में नहीं मरते। हम अग्नियाँ इस लोक में भी उसकी रक्षा करती हैं, परलोक में भी।''

इसके पश्चात् उन अग्नियों ने उपकोशल से फिर कहा- ''बेटा उपकोशल! सम्पूर्ण अग्नि-विद्या और आत्म-विद्या का उपदेश हमने तुझे दे दिया। अब जो ब्रह्म-विद्या शेष है, उसका उपदेश तेरे आचार्य जी तुझे देंगे।''

कुछ काल पश्चात् आचार्य सत्यकाम जी भी अज्ञातवास से लौटे वे दूर से ही ''उपकोशल! उपकोशन!!'' कहकर पुकारने लगे। आचार्य जी की वापसी से उपकोशल को बहुत प्रसन्नता हुई। उसने तुरन्त ही ऊँची आवाज में उत्तर दिया- ''हाँ महाराज! हाँ जी गुरु जी!!''

समीप आकर गुरुजी ने कहा- ''बेटा तेरा चेहरा तो ब्रह्मज्ञानियों के समान चमक रहा है। सच बता, यह उपदेश तुझे किसने दिया है?''

इस पर कुछ उदासी सी जताकर उपकोशल ने कहा- ''महाराज! मुझे कौन उपदेश देता है?

उपकोशल के उत्तर से ऐसा प्रतीत होता था कि मानो अग्नियों से जो उपदेश उसे मिला है, उसे वह छिपाना चाहता है। फिर कुछ सोच विचार करके उसने कहा-

''भगवन्! किसी मनुष्य ने तो मुझे कोई उपदेश नहीं दिया, परन्तु ये जो कुछ विशेष प्रकार की अग्नियाँ हैं, उन्होंने मुझे उपदेश दिया है।'' आचार्य जी के यह पूछने पर कि क्या उपदेश दिया है? उपकोशल ने अग्नियों से प्राप्त सम्पूर्ण उपदेश उन्हें सुना दिया।

उसे सुनकर आचार्य ने कहा- ''हे उपकोशल! अग्नियों ने तुझे जो उपदेश दिया है। वह यथार्थ है, परन्तु उन्होंने लौकिक तुझे केवल लौकिक उपदेश ही दिया है। अर्थात् उन्होंने तुझे केवल भौतिकवाद की ही शिक्षा दी है। अब मैं तुझे वह उपदेश दूँगा, जिससे कि किसी भी प्रकार का पाप या दोष तुझे छू भी न सकेगा। जैसे कि कमल के पत्ते पर पानी नहीं ठहर सकता।''

इस पर उपकोशल को बहुत प्रसन्नता हुई। उसने उपदेश ग्रहण मैं अपनी पूरी-पूरी अभिरुचि प्रकट की। तब आचार्य ने उपकोशल को ब्रह्मविद्या का विस्तृत उपदेश दिया। अपने उपदेश-प्रसंग में आचार्य जी ने कहा-

''आंख में जो यह पुरुष दिखाई देता है, यह अमृत है, यह अभय है, यह महान् है। यदि आंख में घी या पानी डाला जाय तो वह इस पुरुष पर नहीं ठहरता। यह

पुरुष उस का शोषण नहीं करता और, यह वापिस किनारे पर ही आ जाता है। इस आत्मा को 'संयद्वाम' कहते हैं, क्योंकि सब प्रकार की सुन्दरता इस आंख में प्रकाशित आत्मा को ही प्राप्त होती है। जो इस रहस्य को समझ लेता है, उसे सब प्रकार का सौन्दर्य और सुन्दरता के सभी साधन प्राप्त होते हैं। यह आत्मा स्वयं भी बहुत सुन्दर है और सौन्दर्य-प्रद भी है। जो आत्मा के इस रहस्य को समझ लेता है, यह न केवल स्वयं सुन्दर बन जाता है, अपितु वह सुन्दरता का प्रचारक भी बन जाता है। उसे तो असुन्दर को सुन्दर बनाने की कला भी प्राप्त हो जाती है। यही वह आत्मा है, जो सब लोकों को सुप्रकाशित करता है। जो आत्मा के इस रहस्य को समझ लेता है, यह न केवल यह कि स्वयं चमकता है, अपितु वह दूसरों को चमकाने का सामर्थ्य भी प्राप्त कर लेता है। यह सर्वत्र ही प्रकाश का, पवित्रता का विज्ञान का प्रचार करता है।''

''अब जैसा कि उचित भी है, इस प्रकाशमयी स्थिति को प्राप्त करके जो मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है और मरने के समय भी उन सब कामों को सावधानीपूर्वक करता है, जो कि उस समय उचित हैं, अपने आप ही अपना अन्त्येष्टि-कर्म करता है, अथवा प्रकाशपूर्ण और मोहरहित, आनन्दमयी स्थिति को ग्रहण कर लेता है और अपना अन्त्येष्टि कर्म करने का काम दूसरों के लिये छोड़ देता है, उस ब्रह्मज्ञानी का आत्मा आर्चस्-अवस्था को=प्रकाशपूर्ण स्थिति को प्राप्त करता है। प्रकाश से वह दिन को, दिन से शुक्ल-पक्ष को, शुक्ल पक्ष से उत्तरायण को, उत्तरायण से वर्ष को, वर्ष से सूर्य को, सूर्य से चन्द्र को, चन्द्र से विद्युत को अर्थात् विद्युत् जैसी स्थिति को प्राप्त होता है। जब वह विद्युत् जैसी स्थिति को प्राप्त हो जाता है, तब वह सांसारिकता से बहुत ऊँचा उठ जाता है। तब यह स्वयं तो ब्रह्म को=ब्रह्म-बोध को प्राप्त कर ही लेता है। इसके साथ ही यह दूसरों को ब्रह्म-बोध की प्राप्ति में सहायता भी कर सकता है। यही वह शिक्षा है, 'देव विद्या' कहलाती है। इसी को ब्रह्म-मार्ग=ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग भी कहते हैं। जो कोई इस मार्ग से एक बार आगे बढ़ जाता है, वह परम पद को प्राप्त कर लेता है, वह अपने लक्ष्य पर पहुँच जाता है। फिर वह इस लोक में लौट कर नहीं आता, वह जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है। छूट जाता है, यह सच है।

## परोपकारी ग्राहकों हेतु आवश्यक सूचना

परोपकारी के अनेक सदस्यों की यह शिकायत रहती है कि उन्हें पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही है। रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका भेजने पर डाक व्यय बढ़ जाता है। सदस्यों से निवेदन है कि जो रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं, वह निम्नानुसार डाक व्यय सभा के खाते में अग्रिम रूप से जमा करके कार्यालय को सूचित कर दें। रजिस्टर्ड डाक का व्यय (पत्रिका शुल्क के अतिरिक्त) निम्न प्रकार है-

१. प्रत्येक अंक (वर्ष भर २४ अंक) रजिस्टर्ड डाक से मंगाने पर - डाक व्यय - १०००/-

२. एक मास के दो अंक- एक साथ मंगाने पर वार्षिक - डाक व्यय - ५००/-

३. एक वर्ष के २४ अंक- एक साथ मंगाने पर - डाक व्यय - १००/-

**बैंक विवरण**

**खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

# संस्था समाचार

सभा मन्त्री मुनि सत्यजित् जी ने एक विषय रखा कि हमें अपने सामर्थ्य और समय को देखते हुए लक्ष्य ऊँचा बनाना चाहिए या नीचा? अधिकांश लोगों का विचार होता है कि हमें अपना लक्ष्य सदा ऊँचा ही रखना चाहिए। लेकिन इसके साथ यह भी विचार करना चाहिए कि अपना बौद्धिक व शारीरिक सामर्थ्य, धन, सहयोगी आदि को देखते हुए अपना लक्ष्य बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि हमें ट्रेन में जाना है तो हम घर से ट्रेन चलने के आधा घण्टा पहले स्टेशन पहुँचते हैं। जबकि हम १५ मिनट पहले या समय पर भी पहुँच सकते हैं। लेकिन रास्ते में सड़क अवरुद्ध, अधिक भीड़, गाड़ी में खराबी आदि बाधाएं आ सकती है। उस बात को ध्यान में रखते हुए भी लक्ष्य बनाया जाना चाहिए। लक्ष्य की प्राप्ति मुख्य है। उसमें समय कम ज्यादा हो सकता है। बोलने वाले बोल देते हैं कि जो काम एक व्यक्ति कर सकता है। वह काम सभी व्यक्ति कर सकते हैं पर यथार्थ में हर मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता।

मॉरीशस में वैदिक धर्म का छह महीने तक प्रचार करने के बाद पुनः भारत पहुँचे स्वामी आशुतोष जी ने बताया कि यह संसार ईश्वर से व्याप्त है ईश्वर सर्वत्र अखण्ड एकरस भरे हुए हैं। पृथ्वी आदि भगवान् का शरीर बन जाती है। हम इस संसार को मापदण्ड मनाते हैं। ईश्वर को मापदण्ड नहीं बनाते कि ईश्वर मुझे क्या मानते हैं स्वयं क्या हूँ। संसार के लोग जैसा कहते हैं वैसा हम मान लेते हैं। मन के अन्दर भी बहुत सारी गन्दगी भरी हुई है हमें उसे जानना चाहिए और जान कर उसे साफ करना चाहिए। हम शरीर के स्तर पर जीते हैं। आत्मा शरीर से सूक्ष्म है। आत्मा मन, बुद्धि से अलग है। इस बात को समझ कर हमें अपना जीवन जीना चाहिए।

सभा के भूतपूर्व मन्त्री श्री कन्हैयालाल जी ने बताया कि मनुष्य होने के साथ हममें संवेदना होनी चाहिए। इस विषय को आपने अनेक दृष्टान्तों के माध्यम से बताया। एक लाला जी के पास एक व्यक्ति पहुँचता है। लालाजी अखबार पढ़ रहे हैं। वह व्यक्ति लाला जी को कहता है कि मैं भूखा हूँ। मुझे कुछ भोजन दे दो। लाला जी कहते हैं आदमी आएगा तुझे भोजन दे देगा। वह कुछ देर रुकता फिर कहता है लालाजी भूख तेज लग रही है कृपया कुछ भोजन दिलवा दीजिए। सेठ जी थोड़े गुस्से में कहते हैं कि तू रुक आदमी आएगा तुझे भोजन दे देगा। व्यक्ति कुछ देर फिर रुकता है फिर कहता है कि आप ही आदमी बन जाओ। सेठ जी को गुस्सा आ जाता है क्या मैं आदमी नहीं हूँ ? उस व्यक्ति ने कहा कि यदि आप आदमी होते तो आप ही मुझे भोजन दे देते। मनुष्य को ही कहा जाता है तू मनुष्य बन। गधे, घोड़े को नहीं कहा जाता है कि तू गधा ,घोड़ा बन। इसलिए हमारे अंदर मानवीय संवेदनाएं होना जरूरी है। जिससे हम दूसरों के दुःख को समझ सके।

गुरुकुल मलारना चौड़ के आचार्य श्री सोमदेव जी ने बताया कि हमारा दूसरों पर अच्छा प्रभाव कैसे पड़े। इसके लिए पाँच वकारों की चर्चा की। जिसमें पहला वकार वपु अर्थात् शरीर अपने शरीर को जितना स्वस्थ, बलवान, सुडौल, लम्बा सुन्दर बनाए रखेंगे उतना ही दूसरों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। दूसरा वकार विद्या अर्थात् जिस व्यक्ति के पास जितनी अधिक विद्या होगी उसका प्रभाव दूसरों पर उतना ही अधिक पड़ेगा। तीसरा वकार वाणी अर्थात जो व्यक्ति मृदु ,शुद्ध, परिमार्जित वाणी बोलता है उसकी लोग बहुत ही प्रशंसा करते हैं। चौथा वकार वस्त्र हमारे कपड़े का चयन विभिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न होता है। इस बात को समझ कर हम विशेष अवसर पर विशेष कपड़े पहने और कपड़े धुले हुए, साफ सुन्दर और शरीर के अंगों को ढकने वाला हो। अन्तिम वकार विनय जिस व्यक्ति के पास विनय होता है। उसकी लोग प्रशंसा किए बिना नहीं रुकते । इन पाँचों का यथाशक्ति हम जितना अपने जीवन में अपनाएंगे

उतना ही हमारा प्रभाव दूसरों पर पड़ता जाएगा।

आचार्य शक्तिनन्दन जी ने बताया कि राजा दुष्ट मन्त्रणा से विनाश को प्राप्त होता है। कार्य सिद्धि के लिए जो गुप्त विचार करना है उसे मन्त्रणा कहते हैं। देश हो, संस्था हो, परिवार आदि हो जहाँ भी दुष्ट सलाहकार है उस संस्था आदि का नाश हो जाता है। यति बहुत लोगों के संग से अपनी हानि कर बैठता है। बच्चे अधिक लालन से बिगड़ जाते हैं।

परोपकारिणी सभा के अधिकारियों की कार्यकारिणी की बैठक १८ जून को सम्पन्न हुई। जिसमें सभा प्रधान श्री सत्यानन्द जी, सभा मन्त्री मुनि सत्यजित् जी, सभा कोषाध्यक्ष श्री सुभाष जी नवाल व अन्य कार्यकारिणी के सभासद उपस्थित रहे। जिसमें आगामी ऋषि मेला व वृहद् ऋषि मेले के विषय में चर्चाएं हुई।

परोपकारिणी सभा के द्वारा प्रतिवर्ष दो बार योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जाता है। यह योग शिविर स्वामी विष्वङ् जी के सानिध्य में ११ जून से १८ जून २०२३ तक लगाया गया । इस योग शिविर में शिविराथियों को प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षक के रूप में स्वामी विष्वङ् जी, आचार्य सोमदेव जी, आचार्य कर्मवीर जी, आचार्य शक्तिनन्दन जी तथा आचार्य विद्यानन्द जी रहे। योग शिविर में ध्यान उपासना, ज्ञान कर्म उपासना, योग दर्शन, मुण्डक उपनिषद्, शंका समाधान, आत्म निरीक्षण, श्लोक गायन आदि शिविरार्थियों को सिखाया गया। भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुए लगभग ७५ शिविरार्थियों ने इस योग साधना शिविर में भाग लिया और अपने जीवन में योग साधना को सीखा और प्रसन्न होकर यहाँ से गये। कुछ शिविरार्थियों अपने अनुभव सुनाए जिसे आप परोपकारिणी सभा के के यूट्यूब चैनल पर देख सकते हैं।

**वर्षा**- गुजरात से आता हुआ तूफान राजस्थान में प्रवेश करते ही इस वर्ष आर्य वीरांगना दल शिविर के समय अजमेर ऋषि उद्यान में लगभग ४०/५० वर्षों में कभी भी इतना आनासागर का पानी नहीं आया जितना इस समय आया था। लगभग कहीं १ फीट कहीं डेढ़ फीट। यज्ञशाला के चारों ओर पानी ही पानी, लेखराम भवन के अन्दर कमरों में भी पानी चला गया। बहुत सारे लोगों को बहुत कठिनाई हुई । कुछ को अच्छा भी लगा। पाँच छः दिन बीतने के बाद पानी निकला। इसका कारण बताया जाता है कि अजमेर को स्मार्ट सिटी में शामिल करने के कारण आनासागर के अन्दर ही चारों ओर चौपाटी (पाथ वे) बनाया जा रहा है। इसे बनाने में बहुत सारा मिट्टी आनासागर के अन्दर डाला गया है। अतिरिक्त मिट्टी भी आनासागर के अन्दर ही है। उसके कारण आनासागर का जलस्तर बढ़ गया था। पहले १४ फीट था और वर्षा होने से पहले ही दो-तीन फिट खाली करते हैं । वहाँ पानी खाली नहीं किया गया। इस कारण ऐसी स्थिति आई।

भजन के क्रम में पण्डित भूपेन्द्र जी व पण्डित लेखराज जी ने यह भजन गाया- हमारा हमें प्राण प्यारा मिला ना, किया ढूंढ जग पाया उसका पता ना...

**आचार्य ज्ञानचन्द्र**

## विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सास, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्तें। यही कोष अक्षय है, इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाये, इस कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है।

**( सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास ३ )**

।। ओ३म् ।।

# परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
# १४० वाँ ऋषि बलिदान समारोह

**कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से षष्ठी, संवत् २०८० तदनुसार**

**दिनांक १७, १८, १९ नवम्बर २०२३, शुक्र, शनि, रविवार**

विराट् व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण के प्रति कृतज्ञता को प्रकट करने का स्वर्णिम-अवसर ऋषि के १४०वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको पुनः प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है। मुख्य कार्यक्रमों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :-

**अथर्ववेद पारायण यज्ञ**- 'अथर्ववेद पारायण यज्ञ' का आरम्भ मंगलवार १४ नवम्बर से होगा व इसकी पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन १९ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् होंगे

**ध्वजारोहण व उद्घाटन**- बलिदान समारोह का विधिवत् उद्घाटन ओ३म् ध्वजा के आरोहण व प्रधान जी के उद्बोधन के साथ किया जायेगा

**उपदेश-प्रवचन-भजन**- प्रातः यज्ञ के बाद आध्यात्मिक प्रवचन होंगे। पूर्वाह्न, अपराह्न व रात्रि में आयोजित विभिन्न प्रासंगिक विषयों वाले सत्रों में आर्यजगत् के विशिष्ट संन्यासियों, विद्वानों, आचार्यों के विचार सुनने को मिलेंगे। साथ ही भजनोपदेशकों के मधुर भजनों का आनन्द भी प्राप्त होगा।

**वेदगोष्ठी** - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी वेदगोष्ठी साथ में होगी। परोपकारिणी सभा के पूर्वप्रधान स्व. श्री गजानन्द आर्य की स्मृति में परोपकारिणी सभा, अजमेर व महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर एवं अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **महर्षि दयानन्द का समाजिक चिन्तन**। जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे ३१ अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। १७, १८, १९ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

**वानप्रस्थ एवं संन्यास दीक्षा**- इस अवसर पर शुक्र-शनि दिनाङ्क १७ व १८ को दिन में क्रमशः वानप्रस्थ व संन्यास संस्कार भी कराया जायेगा। वानप्रस्थ व संन्यास दीक्षा लेने के इच्छुक व्यक्ति ३१ अक्टूबर तक अपना परिचय आदि जीवनवृत्त परोपकारिणी सभा को भिजवा देवें। उन पर विचार के बाद इसके योग्य व्यक्तियों को वानप्रस्थ या संन्यास दीक्षा देने का निश्चय किया जायेगा।

**चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता**- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी एक वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। १८ नवम्बर को परीक्षा एवं १९ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय ३१ अक्टूबर, २०२३ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

**सम्मान** - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान-समारोह होगा। जिसमें १७ विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा। इनके विशेष योगदान को बताते हुए इनका परिचय भी दिया जायेगा।

**आर्यवीर दल व्यायाम प्रदर्शन**- इस समारोह में शनिवार दिनाङ्क १८ को सायंकाल आर्यवीरों व ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम-आसन आदि का भव्य प्रदर्शन किया जायेगा।

**आर्यसाहित्य व यज्ञादि उपकरणों का विक्रय**- इस अवसर पर परोपकारिणी सभा के अतिरिक्त भी अनेक पुस्तक प्रकाशकों-विक्रेताओं की पुस्तकें, यज्ञ-पात्र-ध्वजा आदि, आयुर्वेदिक औषधियों की दुकानें लगेंगी। इनके क्रय का अवसर प्राप्त होगा।

**ऋषि लंगर**- बलिदान समारोह में पधारे सभी श्रद्धालुओं के लिए ऋषि उद्यान में परोपकारिणी सभा द्वारा पौष्टिक, स्वादिष्ट प्रातराश एवं दो समय के भोजन की व्यवस्था की गई है।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हल्की ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें। सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके। सभी से निवेदन है कि १३९वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आर्यजगत् के अनेक प्रसिद्ध संन्यासी, मुनि, विद्वान्, आचार्य, भजनोपदेशक आदि पधार रहे हैं।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

www.paropkarinisabha.com email : psabhaa@gmail.com

**सत्यानन्द आर्य** **मुनि सत्यजित्**

**प्रधान** **मन्त्री**

## गुरुकुल प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषिउद्यान, अजमेर में संस्कृत भाषा, पाणिनीय व्याकरण, वैदिक दर्शन, उपनिषदादि के अध्ययन हेतु प्रवेश आरम्भ किये गए हैं। इन्हें पढ़कर वैदिक विद्वान्, उपदेशक, प्रचारक बन सकते हैं। कम से कम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण १६ वर्ष से बड़े युवकों को प्रवेश मिल सकता है। प्रवेशार्थी को पहले ३ माह का अस्थाई प्रवेश दिया जाएगा। इस काल में अध्ययन व अनुशासन में सन्तोषजनक स्थिति वाले युवकों को ही स्थाई प्रवेश दिया जाएगा। सम्पूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क है। गुरुकुल में अध्ययन के काल में किसी भी बाहर की परीक्षा को नहीं दिलवाया जाएगा, न उसकी अनुमति रहेगी। प्रवेश व अधिक जानकारी के लिए-

**चलभाष : ७०१४४४७०४० पर सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क समय- अपराह्न ३.३० से ४.३०।**

# वेदगोष्ठी-२०२३

**( कार्त्तिक शुक्ल चतुर्थी से षष्ठी, संवत् २०८० तदनुसार १७, १८ एवं १९ नवम्बर, २०२३ )**

मान्यवर, सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्भावी विद्वानों के सहयोग से सदा की भांति इस वर्ष भी ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध-पत्र **परोपकारी** व वेदपीठ की शोध-पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं। जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते हैं, वे भी इनसे लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। कोविड् के २ वर्षों को छोड़ गत ३५ वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। इस बार वेदगोष्ठी के लिए निर्धारित विषय है:-

## महर्षि दयानन्द का सामाजिक चिन्तन

**उपशीर्षक :**

०१. समाज की अवधारणा ०२. समाज का स्वरूप
०३. समाज की आवश्यकता/अपरिहार्यता ०४. समाज का आरम्भ व विकास
०५. सामाजिक उन्नति का तात्पर्य ०६. जाति प्रथा व वर्ण
०७. समाज की वैदिकता
०८. विभिन्न वर्ण व आश्रम के व्यक्तियों के समान-असमान वर्ण व आश्रम के व्यक्तियों से व्यवहार की रीति।
०९. अन्तर्जातीय सम्बन्ध व वर्ण संकरता १०. विभिन्न आधुनिक व्यवसायों का भिन्न-भिन्न वर्णों में समावेश का निर्णय
११. दलितों की प्रति समाज का कर्त्तव्य १२. महिलाओं के प्रति समाज के विशेष कर्त्तव्य, नियम-व्यवस्था

इस विषय में महर्षि दयानन्द द्वारा जो प्रतिपादित किया गया है, उसके लिए प्रामाणिक ११ उपनिषदों ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक, श्वेताश्वतर उपनिषदों में कौन से सन्दर्भ प्रमाण रूप में उपलब्ध हैं, जिनसे धार्मिक-आध्यात्मिक व्यक्ति अपना ज्ञान व भावना शुद्ध कर ईश्वर की भक्ति में आगे बढ़ सकता है। इन प्रमाणों का संग्रह और सिद्धान्तों की पुष्टि हो, यह इस गोष्ठी का उद्देश्य है। इसी आधार पर विषय का वर्गीकरण भी किया गया है। आप अपने विस्तृत अध्ययन के आधार पर इस विषय को प्रमाणों से पुष्ट करेंगे, ऐसा विश्वास है।

आप विद्वान् हैं। अतः आपसे निवेदन है कि गोष्ठी हेतु अपने विचार प्रेषित करें। आप कौन से पक्ष पर प्रकाश डालने की इच्छा रखते हैं इसकी सूचना लौटती डाक से भेजने की कृपा करें। प्राप्त उत्कृष्ट लेख पुस्तकाकार में प्रकाशित किए जाते हैं। प्रायः गोष्ठियों के लेख प्रकाशित हो चुके हैं। आप जिस विषय पर लिखना चाहें उसकी सूचना गोष्ठी के संयोजक को देने की कृपा करें। पिष्टपेषण न हो तथा विषय का सर्वांगीण विवेचन हो सके इसके लिए ऐसा करना आवश्यक है। लेख टाइप किए गए १० पृष्ठ से अधिक न हो। लेख में प्रस्तुत विचारों एवं तथ्यों के लिए महर्षि कृत ग्रन्थ व भाष्यों के प्रमाण अवश्य उद्धृत करें, प्रमाणों का पूरा पता दें। निबन्धों में आये सन्दर्भ ग्रन्थ एवं अन्य सामग्री की सूची शोध की स्पष्टता के लिए आवश्यक है। यदि आपके पास कम्प्यूटर की व्यवस्था है, तो अपना लेख, खुला (open file) हुआ ई-मेल से भेजें। पत्र/निबन्ध की भाषा हिन्दी या संस्कृत हो सकती

है। लेख स्पष्ट रूप से कागज के एक ओर टाइप किया अथवा सुपाठ्य रूप में लिखा होना चाहिए। वेद गोष्ठी में पढ़े गये सर्वश्रेष्ठ तीन शोध पत्र प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कृत किये जायेंगे। निर्णायकों का निर्णय अन्तिम व सर्वमान्य होगा।

आपका सहयोग ही गोष्ठी की सफलता का आधार है। आपके सुझाव एवं मार्गदर्शन की प्रतीक्षा रहेगी। आप यदि किसी कारण से लेख लिखने में असमर्थ हों तो भी सूचित करने का कष्ट करें।

**गोष्ठी में शोधपत्र प्रस्तुत करने के इच्छुक विद्वान्/शोधार्थी कृपया दिनांक ३१-१०-२०२२ तक अपने शोधपत्र ( सार-संक्षेप सहित ) आचार्य शक्तिनन्दन-९४९०४९२४९४ संयोजक, वेदगोष्ठी, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर को प्रेषित कर दें।**

सादर।

**उत्तराकांक्षी**
**मुनि सत्यजित्**
**मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

## पिछली वेद गोष्ठियों में अब तक निम्नलिखित विषयों पर विचार किया जा चुका है

| | | | |
|---|---|---|---|
| ०१. ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली | १९८८ | १९. वेदों में राजनीतिक चिन्तन | २००६ |
| ०२. वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग। | १९८९ | २०. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है | २००७ |
| ०३. अथर्ववेद समस्या और समाधान। | १९९० | २१. वैदिक समाज विज्ञान | २००८ |
| ०४. वेद और विदेशी विद्वान्। | १९९१ | २२. सत्यार्थप्रकाश का ७ वाँ समुल्लास व वेद | २००९ |
| ०५. वैदिक आख्यानों का वास्तविक स्वरूप। | १९९२ | २३. सत्यार्थप्रकाश का ८ वाँ समुल्लास व वेद | २०१० |
| ०६. वेदों के दार्शनिक विचार। | १९९३ | २४. सत्यार्थप्रकाश का ९ वाँ समुल्लास व वेद | २०११ |
| ०७. सोम का वैदिक स्वरूप। | १९९४ | २५. महर्षिदयानन्दाभिमत मन्तव्य: वैदिक परिप्रेक्ष्य | २०१२ |
| ०८. पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान। | १९९५ | २६. वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास | २०१३ |
| ०९. वैदिक समाज व्यवस्था। | १९९६ | २७. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद | २०१४ |
| १०. वेद और राष्ट्र। | १९९७ | २८. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद | २०१५ |
| ११. वेद और विज्ञान। | १९९८ | २९. दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता | २०१६ |
| १२. वेद और ज्योतिष। | १९९९ | ३०. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त | २०१७ |
| १३. वेद और पदार्थ विज्ञान | २००० | ३१. षड्दर्शनों की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द | २०१८ |
| १४. वेद और निरुक्त | २००१ | ३२. महर्षि दयानन्द की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका और वेद | २०२१ |
| १५. वेद में इतिहास नहीं | २००२ | ३३. उपनिषद् वाङ्मय में ईश्वर चिन्तन | २०२२ |
| १६. वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान | २००३ | | |
| १७. वेद में शिल्प | २००४ | | |
| १८. वेदों में अध्यात्म | २००५ | | |

# परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्य पर

| पुस्तक का नाम | पृ. सं. | वास्तविक मूल्य रुपये | छूट के साथ मूल्य रुपये |
|---|---|---|---|
| ऋग्वेद संहिता | ९०० | ५०० | ४०० |
| अथर्ववेद संहिता | ५५० | ४०० | ३०० |
| ऋग्वेद भाष्य नवम भाग | ४०० | ३०० | २२५ |
| पञ्चमहायज्ञ विधि | ६२ | २० | १५ |
| वैदिक संध्या मीमांसा | १०७ | ४० | ३० |
| महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग) | १३९२ | ८०० | ५०० |
| महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र | ३३६ | २०० | १०० |
| कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग) | ९३८ | ९५० | ६०० |
| डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग) | ८१४ | ५०० | २५० |

**यजुर्वेद भाष्य ( महर्षि दयानन्द सरस्वती ) पृष्ठ संख्या- २१९७, चार भागों का मूल्य = १३००/-**
**डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = १०००/-**

**पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382**

---

**VEDIC PUSTKALAYA**
**0510800A0198064**
**1342679A**
**0510800A0198064.mab@pnb**

**वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु**
**खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर**
**(VEDIC PUSTKALAYA, AJMER)**
**बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-
**0008000100067176**
**IFSC - PUNB0000800**
**UPI ID :**
**0510800A0198064.mab@pnb**

---

## विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सास, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्तें। यही कोष अक्षय है, इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाये, इस कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है। (सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास ३)

# संस्था की ओर से....

## क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है- अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। **आपका दान ८०जी ( आयकर की धारा ) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।**

***अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।***

### अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। राशि जमा करने के पश्चात् दूरभाष द्वारा कार्यालय को अवश्य सूचित करें। दूरभाष - 8890316961

### परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

**खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)**

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

# 'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अतः परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष **'सत्यार्थप्रकाश'** के साथ **'महर्षि का जीवन-चरित्र'** एवं **'आर्याभिविनय'** पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। ५०० **से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।**

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| न्यूनतम | २० प्रतियाँ | ३०००/- रु. |
| | ३० प्रतियाँ | ४५००/- रु. |
| | ५० प्रतियाँ | ७५००/- रु. |
| | १०० प्रतियाँ | १५०००/- रु. |
| | ५०० प्रतियाँ | ७५०००/- रु. |
| | १००० प्रतियाँ | १,५०,०००/- रु. |

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। धन्यवाद।

**मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर**

## सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

**खाताधारक का नाम**

**परोपकारिणी सभा, अजमेर**

**(PAROPKARINI SABHA AJMER)**

**बैंक का नाम**

**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-

**10158172715**

**IFSC - SBIN0031588**

**UPI ID : PROPKARNI@SBI**

# पुस्तक-परिचय

## 'मन के जीते जीत है'

**लेखक- कन्हैयालाल आर्य ( से. नि. उपप्रधानाचार्य )**

**प्रकाशक- चन्द्रवती आर्या वैदिक साहित्य, प्रकाशन, गुरुग्राम, हरियाणा**

**मूल्य- १६०रुपये, पृष्ठ संख्या-२२४**

हमारा मन चारों दिशाओं में घूमता है। मन की स्थिरता नहीं है। उड़ान बहुत ऊँची है। इस कारण यह सत्य है कि 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे मन की छवि' इस कारण गोपियों ने भी उद्धव जी को कहा कि- 'उधो मन नाहीं दस बीस।' यह भी कथन उत्तम है- जहाँ न पहुँचे तन, वहाँ पहुँचे मन। मन अपने चिन्तन पर चलता है। हम मन के संकेत पर चलना आरम्भ कर देते हैं। मन हमें पतन की ओर ले जाता है। मन पर अंकुश लगाना आवश्यक है। मन की स्थिरता से ईश्वर चिन्तन, ध्यान समाधि एवं प्रत्येक कार्य सफल होते हैं अन्यथा मन की अस्थिरता हुई और हम धराशायी हो जाते है, पतन की ओर बढ़ने लगते हैं। उस समय, परिवार, माता-पिता, बन्धु-बान्धव ममतामयी दृष्टि से ओझल हो जाते हैं और सबको घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं फिर 'हमारा न ओर है न ठौर' है वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है।

मन भले ही जड़ है किन्तु कार्य करने में सबल हो जाते हैं। मन को केन्द्रित करना, वश में करना मन अधीन न होना, अपने संकल्प में दृढ़ होना ईश्वर का अटल विश्वास लेकर चलना परम आवश्यक है। इस कारण लेखक का शीर्षक सही है कि मन के जीते जीत है। जिसने मन को वश में कर लिया वह अवश्यम्भावी उत्कर्ष, ज्ञान, साधना व उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होगा।

लेखक ने भी मन के जीत है पर पाठकों के समक्ष कुछ बिन्दु उद्धृत किये हैं इससे आभास होगा कि वास्तव में यह बिन्दु महत्त्वपूर्ण क्यों बन गये। प्रथम बिन्दु में मन विषयक चिन्तन किया है। २. जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा ३. मन बड़ा चञ्चल है। ४. मन की इच्छाशक्ति के शुभ परिणाम ५. मन की संकल्पशक्ति का महत्त्व ६. भक्ति में मन क्यों नहीं लगता ७. मन को वश में करने के उपाय ८. वैदिक साहित्य में मन ९. दैव मन १०. यक्ष मन ११. प्रज्ञान, चेतस् एवं धृति मन १२. प्रत्यग्मान मन १३. समस्त ज्ञान का आधार मन १४. सुसारथि मन १५. क्या मन के बन्धन और मोक्ष का कारण है?

लेखक ने अथक परिश्रम के साथ पन्द्रह बिन्दुओं पर अनेक उदाहरण, मूलभूत कारण, समाधान आदि पर विस्तृत चर्चा, मन के विचारों पर मन्थन कर लेखनबद्ध किया है। पाठकगण विस्तार से पढ़ेंगे तो समझ में आयेगा कि लेखक की सोच व समाधान कितना अनुकूल। आज के समय में अवश्यमेव विचारार्थ है। लेखक का साधुवाद।

**देवमुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर-७७४२२२९३२७**

---

## विद्या की प्रगति कैसे?

वर्णोच्चारण, व्यवहार की बुद्धि, पुरुषार्थ, धार्मिक विद्वानों का संग, विषय कथा-प्रसंग का त्याग, सुविचार से व्याख्या आदि शब्द, अर्थ और सम्बन्धों को यथावत् जानकर उत्तम क्रिया करके सर्वथा साक्षात् करता जाय। जिस-जिस विद्या के कारण जो-जो साधनरूप सत्यग्रन्थ है उन उनको पढ़कर वेदादि पढ़ने के योग्य ग्रन्थों के अर्थों को जानना आदि कर्म शीघ्र विद्वान् होने के साधन हैं। **( व्यवहार भानु )**

---

# श्रीमती परोपकारिणी सभा के अर्द्धवार्षिक उपवेशन के दृश्य

## बैठक में उपस्थित पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्य

सामने की ओर श्री सत्यानन्द आर्य ( प्रधान- परोपकारिणी सभा ), मुनि सत्यजित् ( सभा मन्त्री )
बायीं ओर डॉ. वेदपाल ( सम्पादक- परोपकारी पत्रिका ), स्वामी विष्वङ् परिव्राजक ( अंतरंग सदस्य ), श्री कन्हैयालाल आर्य ( उप-प्रधान )
दायीं ओर श्री सुभाष नवाल ( कोषाध्यक्ष ), न्यायमूर्ति श्री सज्जन सिंह कोठारी ( उपप्रधान ), श्री जयसिंह गहलोत ( संयुक्त मन्त्री )

आर जे/ए जे/80/2021-2023 तक  प्रेषण : १५-१६ जुलाई २०२३  आर.एन.आई. ३९५९/५९

## परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित

# भव्य ऋषि मेला

## १७, १८, १९ नवम्बर २०२३

## सादर आमन्त्रण

प्रेषक:

**परोपकारिणी सभा**

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,
अजमेर ( राजस्थान ) ३०५००१

सेवा में,

डाक टिकिट

This document was created with the Win2PDF “print to PDF” printer available at
http://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

http://www.win2pdf.com/purchase/